## उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग

# असिस्टेंट प्रोफेसर

## एवं

# राजकीय डिग्री कालेज (GDC)

# हिन्दी

## सॉल्वड पेपर्स


**प्रधान सम्पादक**

आनन्द कुमार महाजन

**लेखन सहयोग**

हिन्दी परीक्षा विशेषज्ञ समिति

**कम्प्यूटर ग्राफिक्स**

बालकृष्ण, चरन सिंह

**संपादकीय कार्यालय**

12, चर्च लेन, प्रयागराज-211002

**मो. : 9415650134**

**Email : yctap12@gmail.com**

**www.yctbooks.com/ www.yctfastbooks.com**



**© All rights reserved with Publisher**



**प्रकाशन घोषणा**

प्रधान सम्पादक एवं प्रकाशक आनन्द कुमार महाजन ने ओम सांईं ऑफसेट, प्रयागराज से मुद्रित करवाकर, वाई.सी.टी. पब्लिकेशन्स प्रा. लि., 12, चर्च लेन, प्रयागराज-211002 के लिए प्रकाशित किया।

इस पुस्तक को प्रकाशित करने में सम्पादक एवं प्रकाशक द्वारा पूर्ण सावधानी बरती गई है फिर भी किसी त्रुटि के लिए आपका सुझाव एवं सहयोग सादर अपेक्षित है।

₹ 495/-

**किसी भी विवाद की स्थिति में न्यायिक क्षेत्र प्रयागराज होगा।**

# विषय-सूची

## सॉल्व्ड पेपर्स


- उत्तर प्रदेश उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग असिस्टेन्ट प्रोफेसर एवं राजकीय डिग्री कॉलेज परीक्षा पाठ्यक्रम ............3-6

**उत्तर प्रदेश उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग**

- उत्तर प्रदेश उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग असिस्टेन्ट प्रोफेसर परीक्षा 2021 ....................7-16
- उत्तर प्रदेश उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग असिस्टेन्ट प्रोफेसर परीक्षा 2016 ....................17-24
- उत्तर प्रदेश उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग असिस्टेन्ट प्रोफेसर परीक्षा 2014 ....................25-34

**उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग**

- उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग राजकीय डिग्री कालेज परीक्षा 2021 ....................35-44
- उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग राजकीय डिग्री कालेज परीक्षा 2017 ....................45-58
- उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग राजकीय डिग्री कॉलेज परीक्षा 2013 ....................59-68
- उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग राजकीय डिग्री कॉलेज परीक्षा 2012 ....................69-79
- उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग राजकीय डिग्री कॉलेज परीक्षा 2008 ....................80-94
- उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग डायट प्रवक्ता भर्ती परीक्षा 2014 ....................95-103

**राजस्थान लोक सेवा आयोग**

- राजस्थान लोक सेवा आयोग, असिस्टेंट प्रोफेसर परीक्षा 2020 Shift-I....................104-135
- राजस्थान लोक सेवा आयोग, असिस्टेंट प्रोफेसर परीक्षा 2020 Shift-II ....................136-163
- राजस्थान लोक सेवा आयोग, कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा प्रथम प्रश्न-पत्र 2014 ....................164-179
- राजस्थान लोक सेवा आयोग, कॉलेज लेक्चरर भर्ती परीक्षा द्वितीय प्रश्न-पत्र 2014 ....................180-199

**उत्तराखण्ड लोक सेवा आयोग**

- उत्तराखण्ड लोक सेवा आयोग असिस्टेन्ट प्रोफेसर परीक्षा 2017 ....................200-208

**मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग**

- मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग असिस्टेन्ट प्रोफेसर परीक्षा 2017....................209-228

**छत्तीसगढ़ लोक सेवा आयोग**

- छत्तीसगढ़ लोक सेवा आयोग असिस्टेन्ट प्रोफेसर परीक्षा 2019 ....................229-242
- छत्तीसगढ़ लोक सेवा आयोग असिस्टेन्ट प्रोफेसर परीक्षा 2016 ....................243-255
- छत्तीसगढ़ लोक सेवा आयोग असिस्टेन्ट प्रोफेसर परीक्षा 2014 ....................256-269
- छत्तीसगढ़ लोक सेवा आयोग असिस्टेन्ट प्रोफेसर परीक्षा 2009 ....................270-279

**हरियाणा लोक सेवा आयोग**

- हरियाणा लोक सेवा आयोग असिस्टेन्ट प्रोफेसर परीक्षा 2017....................280-288

# उत्तर प्रदेश उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग, प्रयागराज

# पाठ्यक्रम

**1. हिन्दी भाषा का इतिहासः**

- **हिन्दी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमिः–**
  प्राचीन भारतीय आर्य भाषाएं, मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाएँ और उनके अंतरसंबंध, अपभ्रंश, अवहट्ट (पुरानी हिंदी) का संबंध, आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएँ और उनका वर्गीकरण, हिंदी का भौगोलिक विस्तार, आरंभिक हिंदी का व्याकरणिक तथा अनुप्रयुक्त रूप, हिन्दी की उपभाषाएँ और बोलियाँ - वर्गीकरण तथा क्षेत्र, प्रारंभिक हिंदी के विविध रूप- हिंदी, उर्दू, हिंदुस्तानी, दखिनी हिंदी; काव्यभाषा के रूप में अवधी का उदय और विकास, काव्यभाषा के रूप में ब्रजभाषा का उदय और विकास, साहित्यिक हिंदी के रूप में खड़ी बोली हिंदी का उदय और विकास
- मानक हिंदी का भाषावैज्ञानिक विवरण (रूपगत) : हिंदी की स्वनिम व्यवस्था, हिंदी ध्वनियों के वर्गीकरण का आधार, हिंदी शब्द रचना- उपसर्ग, प्रत्यय, हिंदी की रूप रचना- लिंग, वचन, कारक व्यवस्था के संदर्भ में संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया रूप, हिंदी वाक्य रचना
- हिंदी भाषा प्रयोग के विविध रूप : बोली, मानकभाषा, राजभाषा, राष्ट्रभाषा, संपर्क भाषा, संचार भाषा
- प्रयोजनमूलक हिन्दी की संवैधानिक स्थिति और भारतीय संघ की राजभाषा के रूप में हिंदी का विकास

**2. नागरी लिपि का इतिहास विकास :**

- नागरी लिपि का उद्भव और विकास,
- नागरी लिपि की विशेषताएँ एवं मानकीकरण,
- कंप्यूटर और देवनागरी लिपि से संबंधित सुविधाएँ एवं सॉफ्टवेयर
- यूनिकोड

**3. हिन्दी विस्तारीकरण के वैयक्तिक एवं संस्थागत प्रयास :**

- स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी का विकास,
- हिंदी प्रसार के आंदोलन, प्रमुख व्यक्तियों एवं संस्थाओं का योगदान,
- हिंदी से संबंधित सरकारी संस्थाएँ एवं विभाग,
- सम्मान,
- पुरस्कार
- पत्र पत्रिकाएँ
- हिंदी के जनमाध्यम
- हिंदी पोर्टल एवं वेबपटल

**4. हिंदी साहित्य का इतिहास :**

- साहित्य का इतिहास दर्शन, हिंदी साहित्य के इतिहास लेखन की पद्धतियाँ, हिंदी साहित्य के प्रमुख इतिहास ग्रंथ एवं उनकी विशेषताएँ, हिंदी साहित्य इतिहास का काल विभाजन और नामकरण,
- **आदिकाल :-**
  आदिकालीन साहित्य की सामाजिक-सांस्कृतिक-धार्मिक पृष्ठभूमि, धार्मिक साहित्य- सिद्ध, जैन, नाथ साहित्य, लौकिक साहित्य-रासो काव्यधारा, शृंगारिक काव्यधारा, अमीर खुसरो की कविता
- **भक्ति कालः-**
  भक्ति आंदोलन की पृष्ठभूमि और उसके उदय के सामाजिक-सांस्कृतिक कारण- विविध दृष्टि, भक्ति आंदोलन का अखिल भारतीय स्वरूप और उसका अंतःप्रादेशिक वैशिष्ट्य, भक्तिकाव्य के प्रमुख दार्शनिक सिद्धांत- विशिष्टाद्वैत, शुद्धाद्वैत, द्वैताद्वैत, द्वैत मत, भक्ति काव्य के भेद, हिंदी संत काव्य परंपरा और उसका वैचारिक आधार, संत काव्य में सामाजिक समरसता, हिन्दी की सूफी काव्य परम्परा हिन्दी के असूफी प्रेमाख्यान
- **रीतिकाल :-**
  रीतिकाल की सामाजिक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, रीतिकालीन साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ, रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध, रीतिमुक्त काव्य, रीति के प्रमुख स्रोत, रीतिकालीन कवियों का आचार्यत्व, रीतिकाल के प्रमुख कवि और उनका काव्य, रीति काव्य में लोकजीवन, रीतिकाव्य का अस्मितामूलक विमर्श
- **आधुनिक काल :-**
  - हिंदी गद्य का उद्भव और विकास, भारतेंदु पूर्व हिंदी गद्य, भारतेंदुकालीन हिंदी गद्य, भारतेंदु और उनका मंडल, भारतेंदु मंडल के बाहर के लेखक, पारसी थियेटर और हिंदी रंगमंच, हिंदी पत्रकारिता का आरंभ और 19वीं शताब्दी की हिंदी पत्रकारिता
  - द्विवेदी युगः- महावीर प्रसाद द्विवेदी और उनका युग, हिंदी नवजागरण और सरस्वती, राष्ट्रीय काव्यधारा के प्रमुख कवि, स्वच्छंदतावाद और उसके प्रमुख कवि, द्विवेदीयुगीन हिंदी पत्रकारिता, द्विवेदीयुगीन हिंदी गद्य का वैशिष्ट्य
  - छायावादः- छायावाद की सांस्कृतिक-सामाजिक-दार्शनिक पृष्ठभूमि, छायावाद का आरंभ, छायावाद के विषय में विभिन्न मत, छायावाद की प्रमुख विशेषताएँ, छायावाद के प्रमुख कवि,
  - प्रगतिवाद की अवधारणा, प्रगतिवादी काव्य और उसके प्रमुख कवि
  - प्रयोगवाद और नई कविताः प्रमुख कवि
  - समकालीन कविता

**5. हिंदी साहित्य की गद्य विधाएँ :**

- **हिंदी उपन्यास :** उपन्यास की अवधारणा, प्रेमचंद पूर्व उपन्यास, प्रेमचंद और उनका युग, प्रेमचंद के परवर्ती उपन्यासकार, स्वातंत्र्योतर हिन्दी उपन्यास

- **हिंदी कहानी :** हिंदी कहानी का उद्भव और विकास, हिंदी कहानी के प्रमुख आंदोलन, कहानी और नई कहानी, हिंदी कहानी की प्रमुख प्रवृत्तियां,
- **हिंदी नाटक :** हिंदी नाटक और रंगमंच, भारतीय नाट्य परंपरा और नाट्यशास्त्र का संक्षिप्त परिचय, हिंदी नाटक के विकास के चरण, भारतेंदु युग पूर्व के नाटक, भारतेंदु युग के नाटक, प्रसाद युग और प्रसादोत्तर युग के नाटक, स्वातंत्र्योत्तर युग के नाटक, हिंदी एकांकी, हिंदी के प्रमुख एकांकीकार
- **हिंदी निबंध :** हिन्दी निबंध का विकास, हिंदी निबंध की मूलभूत विशेषताएँ, हिन्दी निबंध के प्रमुख भेद, हिन्दी के प्रमुख निबंधकार,
- **हिंदी आलोचना :** हिंदी आलोचना का उद्भव और विकास, हिंदी के प्रमुख आलोचक और आलोचनात्मक स्थापनाएँ
- **हिंदी की कथेतर गद्य विधाएँ :** संस्मरण, रेखाचित्र, जीवनी, आत्मकथा, रेडियो एकांकी, डायरी, रिपोर्ताज, साक्षात्कार, यात्रा साहित्य, पत्र साहित्य, ब्लॉग लेखन (चिट्ठाकारिता)

**6. साहित्यशास्त्र और आलोचना :**

**काव्यशास्त्र :-**

- काव्य के लक्षण, काव्य प्रयोजन, काव्यहेतु, काव्य दोष, काव्य गुण, काव्य के रूप,
- काव्य के प्रमुख संप्रदाय एवं सिद्धांत- रस, अलंकार, रीति, ध्वनि, वक्रोक्ति, औचित्य
- रस निष्पत्ति, साधारणीकरण, भरतमुनि, का रस सूत्र और उसके प्रमुख व्याख्याकार, रस के अवयव, भेद
- शब्द शक्तियाँ
- अलंकार- अनुप्रास, यमक, वक्रोक्ति, श्लेष, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, संदेह, भ्रांतिमान, अतिशयोक्ति, अन्योक्ति, समासोक्ति, अत्युक्ति, विशेषोक्ति, विभावना, प्रतीप, व्यतिरेक, अर्थांतरन्यास, असंगति, विरोधाभास, तद्गुण, अतद्गुण, मीलित, उन्मीलित, अपन्हुति
- प्लेटो के काव्य सिद्धांत
- अरस्तु की काव्य विषयक मान्यताएँ, त्रासदी के तत्व, अनुकरण सिद्धांत, विरेचन का सिद्धांत, त्रासदी और महाकाव्य में अंतर
- होरेसः काव्य विषयक मान्यताएं
- लोंजाइनसः काव्य में उदात्त तत्व
- शास्त्रीयतावाद और स्वच्छंदतावाद
- क्रोचे का अभिव्यंजनावाद
- आई.ए रिचर्ड्स और टी.एस. इलियट के काव्य सिद्धांत
- नई समीक्षा

**7. हिंदी आलोचना के पारिभाषिक शब्द और कतिपय अवधारणाएँ :**

- काव्यभाषा, बिंब, मिथक, कल्पना, फैंतेसी, निजंधरी कथा, कविसमय, काव्यरूढ़ि
- प्रतिभा, व्युत्पति, अभ्यास, अनुभूति अप्रस्तुत योजना, संकेतग्रह, बिम्बग्रहण, आनंद की साधनावस्था और सिद्धावस्था, शीलदशा, भावदशा, लोकमंगल, प्रत्यक्ष रूपविधान, स्मृत रूपविधान, कल्पित रूपविधान, भाव एवं मनोविकार, ज्ञानात्मक संवेदना और संवेदनात्मक ज्ञान, लाक्षणिक मूर्तिमत्ता, उपचार वक्रता, आदर्शोन्मुख यथार्थ, विरुद्धों का सामंजस्य, लघु मानव, मानोमयकोश, आलंबनत्व धर्म, अनुभूति, कल्पना, चेतना प्रवाह, रूप, कथ्य, सहृदय,
- विडंबना (आयरोनी), अजनबीपन (एलियनेशन), विसंगति (एब्सर्ड), अंतर्विरोध (पैराडॉक्स), संत्रास, विरोधाभास, विपथन
- उतरआधुनिकता, मार्क्सवाद, मनोविश्लेषणवाद, अस्तित्ववाद, यथार्थवाद, आदर्शवाद, अतियथार्थवाद, मानववाद, प्रभाववाद, आधुनिकतावाद, संरचनावाद, रूपवाद, अस्मितामूलक विमर्श (दलित, स्त्री, आदिवासी, थर्ड जेंडर)
- पुनर्जागरण, गांधीवाद, अंबेडकर दर्शन, लोहिया दर्शन, एकात्म मानववाद, सांस्कृतिक आलोचना
- हिंदी के प्रमुख आलोचक और उनकी आलोचनात्मक स्थापनाएँ

## प्रमुख रचनाकार और रचनाएँ

**8. हिंदी काव्य :**

गोरखवाणी, संपादक- पीतांबर दत्त बड़थ्वाल, पद संख्या - 1, 6, 7, 9 ,11, 12, 14, 15, 17, 28, 30, 32, 33, 36, 46, 51, 52, 54, 55, 57, 68, 69, 119, 123, 153

**विद्यापति :** विद्यापति पदावली, संपादक - रामफेर त्रिपाठी, पद संख्या - 1, 2, 4, 6, 9, 10, 15, 20, 23, 33, 34, 36, 231, 239, 241, 251, 252, 254, 271, 274

**कबीर :** कबीर वाणी पीयूष, संपादक - जयदेव सिंह, वासुदेव सिंह, सुमिरन को अंग, विरह को अंग, परचा को अंग, सहज को अंग, पद - 2, 3, 6, 7, 8, 9, 10, 11, 12, 13, 14

**जायसी :** जायसी ग्रंथावली, संपादक - रामचंद्र शुक्ल, नख-शिख खंड और नागमती वियोग खंड

**सूरदास :** भ्रमरगीत सार, संपादक - रामचंद्र शुक्ल, पद संख्या 21 से 70 तक

**तुलसीदास :** रामचरितमानस - उत्तरकांड, गीता प्रेस, गोरखपुर

**मीराबाई :** संपादक विश्वनाथ त्रिपाठी - आरंभ के 20 पद

हजारी प्रसाद द्विवेदी - नाखून क्यों बढ़ते हैं

कुबेरनाथ राय - महाकवि की तर्जनी

विद्यानिवास मिश्र - अस्ति की पुकार हिमालय

हरिशंकर परसाई - विकलांग श्रद्धा का दौर

**आलोचना : प्रमुख आलोचक**

रामचंद्र शुक्ल, नंददुलारे वाजपेयी, डॉ. नगेंद्र, हजारी प्रसाद द्विवेदी, रामविलास शर्मा, विजयदेव नारायण साही, रामस्वरूप चतुर्वेदी, नामवर सिंह की प्रमुख स्थापनाएँ

**आत्मकथा :**

पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' - अपनी खबर

**जीवनी :**

विष्णु प्रभाकर - आवारा मसीहा

**संस्मरण :**

विष्णुकान्त शास्त्री - सुधियाँ उस चन्दन के वन की

**यात्रा साहित्य :**

निर्मल वर्मा - चीड़ों पर चांदनी

**रेखाचित्र :**

महादेवी वर्मा - मेरा परिवार

**रिपोतार्ज :**

फणीश्वर नाथ रेणु - ऋणजल धनजल

**डायरी :**

रमेशचन्द्र शाह - अकेला मेला

**साक्षात्कार :**

बनारसीदास चतुर्वेदी - प्रेमचंद के साथ दो दिन

**पत्र साहित्य :**

जानकी वल्लभ शास्त्री - निराला के पत्र
अमृत राय - चिट्ठी पत्री
भगवती चरण वर्मा - भूले बिसरे चित्र
शिव प्रसाद सिंह - नीला चाँद
अमृतलाल नागर - मानस का हंस
यशपाल - झूठा सच
श्रीलाल शुक्ल - राग दरबारी
भीष्म साहनीः वसंती
मन्नू भंडारी - आपका बंटी

**कहानी :**

प्रेमचंद - दुनिया का अनमोल रतन, कफन
राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह - कानों में कंगना
विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक' - ताई
चन्द्रधर शर्मा गुलेरी - उसने कहा था
जयशंकर प्रसाद - आकाशदीप
जैनेन्द्र - पत्नी
फणीश्वर नाथ 'रेणु' - लाल पान की बेगम, रसप्रिया
सच्चिदानन्द वात्स्यायन अज्ञेय - रोज, शरणदाता
भीष्म साहनी - चीफ की दावत
उषा प्रियंवदा - वापसी
निर्मल वर्मा - परिंदे
कमलेश्वर - दिल्ली में एक मौत
राजेन्द्र यादव - जहाँ लक्ष्मी कैद है
मोहन राकेश - मलबे का मालिक

**हिंदी नाटक :**

भारतेंदु हरिश्चंद्र - अंधेरी नगरी
जयशंकर प्रसाद - चंद्रगुप्त
धर्मवीर भारती - अंधा युग
लक्ष्मीनारायण लाल - सिंदूर की होली
मोहन राकेश - आषाढ़ का एक दिन
उपेंद्रनाथ 'अश्क' - अंजो दीदी

**10. कथेतर गद्य विधाएँ :**

**हिंदी निबंध :**

भारतेंदु हरिश्चंद्र - भारतवर्षोन्नति कैसे हो सकती है, वैष्णवता और भारतवर्ष
प्रताप नारायण मिश्र - आप, धोखा
बालकृष्ण भट्ट - साहित्य जन समूह के हृदय का विकास है
बालमुकुंद गुप्त - शिव शंभू के चिट्ठे
चंद्रधर शर्मा गुलेरी - धर्म और समाज
महावीर प्रसाद द्विवेदी - कवि कर्तव्य
सरदार पूर्ण सिंह - आचरण की सभ्यता
रामचन्द्र शुक्ल - श्रद्धा और भक्ति

**रहीम :** रहीम रचनावली, संपादक - सत्यप्रकाश मिश्र, दोहावली- 4, 13, 14, 16, 22, 23, 25, 27, 30, 31, 32, 35, 37, 40, 43, 44, 51, 63, 67, 72, 74, 75, 77, 89, 119, 124, 158, 168, 175, 209, 214, 219, 224, 225, 232, 239, 242, 243, 289, 290 (40 दोहे)

**केशव :** केशवदास - केशव कौमुदी, भाग 1, टीकाकार - लाला भगवान दीन,
पाँचवां प्रकाश - छंद संख्या 10, 13, 14, 16, 17, 19, 22, 24, 31, 36, 38, 42, ग्यारहवाँ प्रकाश - 17, 18, 26, तेरहवाँ प्रकाश - 22, 53, 85, सोलहवाँ प्रकाश - 4, 6, 7, 11, 12, 13, 24

**बिहारी :** बिहारी, संपादक - विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, दोहा संख्या- 5, 8, 11, 21, 29, 33, 34, 37, 41, 43, 55, 84, 96, 111, 134, 163, 182, 185, 199, 213, 215, 224, 235, 347, 263, 265, 326, 358, 367, 390, 403, 409, 436, 437, 440, 467, 525, 534, 539, 558 (40 दोहे)

**भूषण :** भूषण ग्रंथावली, संपादक - विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, पद संख्या - 50, 53, 55, 61, 62, 76, 78, 83, 92, 100, 274, 182, 195, 213, 231, 233, 323, 415, 420, 421 (20 छंद)

**रसखान :** रसखान रचनावली (सं. विद्यानिवास मिश्र, सत्यदेव मिश्र) - सुजान रसखान - सवैया - 1, 2, 3, 5, 8, 12, 13, 18, 21, 27, 31, 32, 37, 41, 51, 53, 55, 56, 61, 63

**घनानंद :** घनानंद कवित्त (सं. विश्वनाथ प्र. मिश्र), कवित सं. 1 से 30 तक

**मैथिलीशरण गुप्त :** साकेत, नवम् सर्ग

**जयशंकर प्रसाद :** कामायनी - आशा, श्रद्धा, लज्जा सर्ग

**सूर्यकांत त्रिपाठी निराला :** राम की शक्ति पूजा, जागो फिर एक बार (भाग 2), भारती जय विजय करे, वर दे वीणा वादिनी वर दे

**सुमित्रानंदन पंत :** प्रथम रश्मि, नौका विहार, संध्या, एक तारा, भारत माता, द्रुत झरो जगत के जीर्ण पत्र

**महादेवी वर्मा :** दीपशिखा (दीप मेरे जल अकम्पित, पंथ रहने दो अपरिचित, मैं न यह पथ जानती थी, सब आँखों के आँसू उजले, सब के सपनों में सत्य पला), सांध्य गीत (मैं नीर भरी दुख की बदली, दीप तेरा दामिनी, देव अब वरदान कैसा)

**सच्चिदानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' :** असाध्य वीणा, नदी के द्वीप

**गजानन माधव 'मुक्तिबोध' :** अंधेरे में

**रामधारी सिंह 'दिनकर' :** रेणुका (हिमालय), सामधेनी (आग की भीख, दिल्ली और मास्को, जयप्रकाश, राही और बाँसुरी, सिंहासन खाली करो कि जनता आती है, कलम आज उनकी जय बोल)

नागार्जुन : हजार हजार बाँहों वाली, अकाल और उसके बाद, गुलाबी चूड़ियाँ, बादल को घिरते देखा है, कालिदास

**शमशेर बहादुर सिंह :** भारत की आरती, एक पीली शाम, शाम होने को हुई, निराला के प्रति, एक नीला आइना बेठोस, दूब

**केदारनाथ अग्रवाल :** मेरी धरती और मैं, प्यासी धरती की पुकार, सुनता है बादल, जागरण की कामना, निराला के प्रति, माँझी न बजाओ बंशी, किसान से

**भवानी प्रसाद मिश्र :** गीत फरोश, सतपुड़ा के जंगल

**सुदामा पाण्डे 'धूमिल' :** मोचीराम, जनतंत्र के सूर्योदय में सच्ची बात

**9. कथा साहित्य :**

**हिंदी उपन्यास :**

प्रेमचंद - गोदान
चतुरसेन शास्त्री - वयम रक्षामः
वृंदावनलाल वर्मा - विराटा की पद्मिनी
हजारी प्रसाद द्विवेदी - पुनर्नवा
सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेयः नदी के द्वीप
फणीश्वरनाथ रेणु - मैला आंचल

## UP GDC हिन्दी

**इकाई - एक**

**हिन्दी साहित्य का इतिहास एवं लोक साहित्य**

1. साहित्येतिहास लेखन की परम्परा
2. काल-विभाजन एवं नामकरण
3. सिद्ध, नाथ एवं जैन साहित्य : रचनाएँ एवं रचनाकार
4. रासो काव्यपरम्परा : रचनाएँ एवं रचनाकार
5. लोक-साहित्य : पारिभाषिक स्वरूप एवं तत्व
6. लोक साहित्य की विविध विधाएँ : स्वरूप, परिचय (लोकगीत, लोककथा, लोकगाथा, लोकनाट्य)

**इकाई - दो**

**मध्यकालीन काव्य**

1. भक्ति काव्य की विधि धाराएँ : वैचारिकता, प्रवृत्तियाँ, रचनाएँ एवं रचनाकार
   (अ) हिन्दी की संत काव्यपरम्परा
   (ब) हिन्दी की प्रेमाख्यानक काव्यपरम्परा
   (स) रामभक्ति काव्यपरम्परा
   (द) कृष्णभक्ति काव्यपरम्परा
2. रीतिकालीन काव्य प्रवृत्तियाँ, रचनाएँ एवं रचनाकार
   (अ) रीतिबद्ध काव्य धारा
   (ब) रीतिसिद्ध काव्य धारा
   (स) रीतिमुक्त काव्य धारा

**इकाई - तीन**

**आधुनिक हिन्दी-काव्य**

1. भारतीय नवजागरण
2. भारतेन्दुयुगीन काव्य : प्रमुख कवि एवं रचनाएँ
3. द्विवेदीयुगीन काव्य : प्रमुख कवि एवं रचनाएँ
4. छायावादी काव्य : प्रमुख कवि एवं रचनाएँ
5. प्रगतिवादी काव्य : प्रमुख कवि एवं रचनाएँ
6. प्रयोगवाद एवं नयी कविता : प्रमुख कवि एवं रचनाएँ
7. साठोत्तरी एवं समकालीन कविता : प्रमुख कवि एवं रचनाएँ

**इकाई - चार**

**आधुनिक कथा साहित्य**

1. प्रेमचन्द–पूर्व हिन्दी–उपन्यास
2. प्रेमचन्द–युगीन हिन्दी–उपन्यास
3. प्रेमचन्दोत्तर हिन्दी उपन्यास (आज तक)
4. हिन्दी की आरम्भिक कहानियाँ
5. स्वतंत्रता - पूर्व हिन्दी-कहानी
6. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी (आज तक)

**इकाई - पाँच**

**आधुनिक नाट्य साहित्य एवं कथेतर गद्य**

1. हिन्दी नाट्य साहित्य : उद्भव और विकास
2. हिन्दी-एकांकी : उद्भव और विकास
3. अन्य नाट्य रूप : रेडियो नाट्य, गीति नाट्य, नुक्कड़ नाटक, टेलिड्रामा
4. हिन्दी की कथेतर गद्य-विधाएँ : रचनाकार एवं रचनाएँ, गद्यगीत, रेखाचित्र, संस्मरण, यात्रा वृत्तांत जीवनी, आत्मकथा, रिपोर्ताज, डायरी एवं पत्र साहित्य।

**इकाई - छः**

**सामान्य भाषा विज्ञान एवं प्रयोजनमूलक हिन्दी**

1. भाषा विज्ञान : सामान्य परिचय, परिभाषा, क्षेत्र
2. भाषा : परिभाषा, प्रकृति, विविध रूप (बोली, उपभाषा, भाषा, मानक भाषा)
3. हिन्दी-ध्वनियों का वर्गीकरण
4. शब्द : परिभाषा और भेद, शब्द समूह का वर्गीकरण
5. वाक्य : परिभाषा एवं तत्व, वाक्य का विभाजन, वाक्य के भेद
6. हिन्दी की संवैधानिक स्थिति
7. पारिभाषिक शब्दावली : अभिप्राय एवं वर्गीकरण (विज्ञान, प्रशासन, विधि एवं वाणिज्य क्षेत्र की शब्दावली)
8. हिन्दी-पत्रकारिता : उद्भव एवं विकास
9. रेडियो और दूरदर्शन पत्रकारिता
10. कम्प्यूटर, इण्टरनेट और हिन्दी

**इकाई - सात**

**भारतीय एवं पाश्चात्य साहित्य-सिद्धांत**

1. भारतीय काव्य शास्त्र के विविध संप्रदाय
   (रस, अलंकार, रीति, ध्वनि, वक्रोक्ति, औचित्य)
2. पाश्चात्य साहित्य-सिद्धांत
   (अरस्तू का अनुकरण एवं विरेचन-सिद्धांत, कोचे का अभिव्यंजनावाद) कॉलरिज का कल्पनासिद्धांत, रिचर्ड का मूल्य-सिद्धांत, टी.एस. इलियट का निर्वैयक्तिकता-सिद्धान्त।
3. विभिन्न मतवाद
   अस्तित्ववाद, मार्क्सवाद, संरचनावाद, उत्तर आधुनिकतावाद
4. हिन्दी-साहित्य और स्त्री विमर्श
5. हिन्दी-साहित्य और दलित विमर्श

# उत्तर प्रदेश उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग परीक्षा 2021
# असिस्टेन्ट प्रोफेसर
# हिन्दी

**व्याख्यात्मक हल प्रश्न पत्र** **(परीक्षा तिथि : 13.11.2021)**

**1. धान को गाँव पयार ते जानौ**
**ज्ञान विषयरस भोरे**
**सूर सो बहुत कहै न रहे रस**
**गूलर को फल फोरे ।'**
**इसमें अंतिम पंक्ति का क्या अर्थ है?**

(a) गूलर में रस नहीं है।
(b) गूलर का फल रुखा है।
(c) गूलर का फल खट्टा है।
(d) ढकी छिपी बात बोलने से कही गई बात का आनन्द समाप्त हो जाता है।

**Ans. (d) :** उपर्युक्त काव्यांश के अन्तिम पंक्ति का अर्थ है- 'ढकी छिपी बात बोलने से कही गई बात का आनन्द समाप्त हो जाता है।' यह पद रामचन्द्र शुक्ल द्वारा सम्पादित 'भ्रमरगीत सार' में संकलित है। 'भ्रमरगीत सार' महाकवि सूरदास के पदों का संग्रह है। जिसे शुक्ल जी ने 'सूरसागर' के भ्रमरगीत से लगभग 400 पदों को छांटकर उनको 'भ्रमरगीत सार' के रूप में प्रकाशित कराया था।

**2. 'कामायनी' का नौवां सर्ग कौन सा है?**

(a) कर्म (b) ईर्ष्या
(c) इड़ा (d) स्वप्न

**Ans. (c) :** जयशंकर प्रसाद कृत 'कामायनी' का नौवां सर्ग 'इड़ा' है। इस महाकाव्य में कुल 15 सर्ग हैं, जो इस प्रकार हैं–

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. चिन्ता | 2. आशा | 3. श्रद्धा | 4. काम |
| 5. वासना | 6. लज्जा | 7. कर्म | 8. ईर्ष्या |
| 9. इड़ा | 10. स्वप्न | 11. संघर्ष | 12. निर्वेद |
| 13. दर्शन | 14. रहस्य | 15. आनन्द। | |

इस महाकाव्य के चार मुख्य पात्र हैं और प्रत्येक पात्र का एक विशेष प्रतीक है–

| पात्र | प्रतीक |
|---|---|
| मनु | मन |
| श्रद्धा | हृदय |
| इड़ा | बुद्धि |
| कुमार | मानव |

* इसमें मुख्य छंद 'ताटंक' तथा 'शांत' रस है।
* आचार्य शांतिप्रिय द्विवेदी ने 'कामायनी' को छायावाद का उपनिषद् कहा है।

**3. निराला की 'राम की शक्तिपूजा' किससे प्रेरित होकर लिखी गई है?**

(a) गीतांजलि से (b) कृतिवास रामायण से
(c) रामचरित मानस से (d) वाल्मीकि रामायण से

**Ans. (b) :** सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' द्वारा रचित 'राम की शक्ति पूजा' (1936 ई.) 'कृतिवास रामायण' से प्रेरित होकर लिखी गई है। यह एक लम्बी कविता है। यह कविता निराला के प्रथम संग्रह 'अनामिका' के द्वितीय संस्करण (1938) में प्रकाशित हुई।
जबकि 'गीतांजलि' के रचनाकार 'रवीन्द्र नाथ टैगोर' तथा 'रामचरित मानस' के रचनाकार गोस्वामी तुलसीदास हैं।

**4. 'जिन्दगी निष्क्रिय बन गयी तलघर**
**अब तक क्या किया**
**जीवन क्या जिया'-ये किस कवि की पंक्तियाँ हैं ?**

(a) मुक्तिबोध की
(b) धूमिल की
(c) रघुवीर सहाय की
(d) नागार्जुन की

**Ans. (a) :** 'जिन्दगी निष्क्रिय बन गयी तलघर
अब तक क्या किया
जीवन क्या जिया'

उपर्युक्त पंक्ति गजानन माधव 'मुक्तिबोध' की कविता 'अंधेरे में' से उद्धृत है। यह पंक्ति 'चाँद का मुँह टेढ़ा है' (1964 ई.) काव्य संग्रह में संगृहीत है। 'अंधेरे में' कविता का प्रथम प्रकाशन 'कल्पना' पत्रिका 1964 ई. में 'आशंका के द्वीप अँधेरे में' नाम से हुआ।
मुक्तिबोध की अन्य रचनाएँ – भूरि-भूरि खाक धूल (1980 ई.), ब्रह्मराक्षस, भूल गलती आदि हैं।
प्रमुख कवि और उनकी काव्य पंक्तियाँ निम्न हैं-

| पंक्ति | कवि |
|---|---|
| • कई दिनों तक चूल्हा रोया चक्की रही उदास | - नागार्जुन |
| • राष्ट्रगीत में भला कौन वह भारत-भाग्य विधाता है | -रघुवीर सहाय |
| • कविता भाषा में आदमी होने की तमीज है | - धूमिल |

**5. प्रेमचंद का कौन सा उपन्यास पहले उर्दू में 'बाजारे हुस्न' के नाम से लिखा गया था ?**

(a) प्रेमाश्रम (b) कायाकल्प
(c) सेवासदन (d) रंगभूमि

**Ans. (c) :** प्रेमचन्द का 'सेवासदन' (1918 ई.) उपन्यास पहले उर्दू में 'बाजारे हुस्न' (1917 ई.) नाम से लिखा गया था।
जबकि प्रेमाश्रम (1922 ई.), रंगभूमि (1925 ई.) तथा कायाकल्प (1926 ई.) इनके अन्य उपन्यास हैं।
* 'सेवासदन' प्रेमचन्द का पहला प्रौढ़ उपन्यास है।
* 'प्रेमाश्रम' उपन्यास पहले उर्दू में 'गोशाएँ आफियत' नाम से तथा 'रंगभूमि' 'चौगाने हस्ती' नाम से लिखा गया था।

**6. 'उसने कहा था' कहानी का प्रकाशन किस वर्ष हुआ था?**

(a) सन् 1914 ई. (b) सन् 1915 ई.
(c) सन् 1916 ई. (d) सन् 1917 ई.

**Ans. (b) :** चन्द्रधर शर्मा गुलेरी कृत 'उसने कहा था' का प्रकाशन वर्ष 1915 ई. है, जबकि 'सुखमय जीवन' (1911 ई.) तथा 'बुद्धू का काँटा' (1914 ई.) में प्रकाशित हुआ।
'उसने कहा था' प्रथम विश्व युद्ध की पृष्ठभूमि पर लिखी गई प्रेम संवेदना की कहानी है। इस कहानी के प्रमुख पात्र- लहना सिंह, बोधासिंह, सूबेदार हजारा सिंह आदि हैं।

**7. 'अंधायुग' का वह कौन सा पात्र है जो अभिशप्त जीवन जीने को बाध्य है?**

(a) दुर्योधन (b) युयुत्सु
(c) धृतराष्ट्र (d) अश्वत्थामा

**Ans. (d) :** 'अश्वत्थामा' अंधायुग का वह पात्र है, जो अभिशप्त जीवन जीने को बाध्य है। 'अंधायुग' (1955 ई.) 'धर्मवीर भारती' द्वारा रचित एक गीतिनाट्य है। 'अंधायुग' का कथानक महाभारत युद्ध के अन्तिम दिन पर आधारित है। इसमें युद्ध और उसके बाद की समस्याओं और मानवीय महत्वाकांक्षा को प्रस्तुत किया गया है। अंधायुग के प्रमुख पात्र हैं- अश्वत्थामा, गान्धारी, धृतराष्ट्र, कृतवर्मा, संजय, विदुर, युधिष्ठिर, युयुत्सु, कृष्ण इत्यादि।

**8. 'मृदंगिया' किस कहानी का पात्र है?**

(a) लाल पान की बेगम का (b) पंचलाइट का
(c) संवदिया का (d) रसप्रिया का

**Ans. (d) :** फणीश्वर नाथ 'रेणु' द्वारा रचित कहानी 'रसप्रिया' का पात्र 'मृदंगिया' है। जबकि लाल पान की बेगम, पंचलाइट, तीसरी कसम उर्फ मारे गए गुलफाम तथा संवदिया इनकी अन्य कहानियाँ हैं। इनकी अन्य कहानियाँ एवं उनके पात्र हैं-

| कहानी | प्रमुख पात्र |
|---|---|
| रसप्रिया | मृदंगिया |
| लाल पान की बेगम | बिरजू, चम्पिया, सुनरी, जंगी की पतोहू |
| संवदिया | हरगोबिन, सूरदास, बड़ी बहुरिया |
| पंचलाइट | गोधन, मुनरी |

**9. 'वैद्यजी' किस उपन्यास के पात्र हैं?**

(a) झूठा सच (b) भूले बिसरे चित्र
(c) राग दरबारी (d) विश्रामपुर का संत

**Ans. (c) :** 'वैद्य जी' श्रीलाल शुक्ल के उपन्यास 'रागदरबारी' (1968 ई.) के पात्र हैं, इस उपन्यास में शिवपालगंज की जिन्दगी का यथार्थ चित्रण है। रागदरबारी पर इन्हें 1969 ई. का 'साहित्य अकादमी' पुरस्कार प्राप्त हुआ। 'सूनी घाटी का सूरज' (1957 ई.), 'अज्ञातवास' (1962 ई.), 'विश्रामपुर का संत' (1998 ई.) आदि इनकें अन्य उपन्यास हैं।

| उपन्यास | पात्र | रचनाकार |
|---|---|---|
| राग दरबारी | वैद्य जी, रूप्पन बाबू, बद्री अग्रवाल रंगनाथ, जोगनाथ। | श्री लाल शुक्ल |
| विश्रामपुर का संत | कुंवर जयंती प्रसाद, राजश्री, धीरज सिंह | श्री लाल शुक्ल |
| झूठा सच | जयदेव पुरी, तारा, कनक | यशपाल |
| भुले बिसरे चित्र | विद्या ज्वालाप्रसाद | भगवती चरण वर्मा |

**10. 'पिता गये, माता गयी, गुरुदेव गये, कंधे से कंधा भिड़ाकर प्राण देने वाला चिर सहचर सिंहरण गया--।' चंद्रगुप्त नाटक में यह कथन किसका है**

(a) चंद्रगुप्त (b) चाणक्य
(c) मालविका (d) अलका

**Ans. (a) :** 'पिता गये, माता गयी, गुरुदेव गये, कंधे से कंधा भिड़ाकर प्राण देने वाला चिर सहचर सिंहरण गया--।'
उपर्युक्त कथन जयशंकर प्रसाद रचित 'चन्द्रगुप्त' (1931 ई.) नाटक के प्रमुख पात्र 'चन्द्रगुप्त' का है। जबकि चाणक्य, मालविका तथा अलका इस नाटक के अन्य पात्र हैं। जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित अन्य नाटक हैं- सज्जन, कल्याणी परिणय, करुणालय, प्रायश्चित्, राज्यश्री, विशाख, अजातशत्रु, जनमेजय का नागयज्ञ, कामना, स्कन्दगुप्त, ध्रुवस्वामिनी।

**11. 'इस देश की प्रजा के हृदय में कोई स्मृति मंदिर बना जाने की शक्ति आप में है। पर यह सब तब हो सकता है कि वैसी स्मृति की कदर आपके हृदय में भी हो।' इस पंक्तियों के लेखक कौन हैं?**

(a) हजारी प्रसाद द्विवेदी (b) बालमुकुन्द गुप्त
(c) बालकृष्ण भट्ट (d) प्रताप नारायण मिश्र

**Ans. (b) :** उपर्युक्त कथन बालमुकुन्द गुप्त द्वारा रचित निबन्ध 'शिवशम्भु के चिट्ठे' से उद्धृत है, इनके निबन्ध 'गुप्त निबन्धावली' शीर्षक से प्रकाशित हैं। गुप्त जी का जन्म गुड़ियानी गाँव जिला रिवाड़ी, हरियाणा में हुआ था। इन्होंने 'भारतमित्र' नामक पत्रिका का सम्पादन 1899 में कलकत्ता से किया।

12. 'भाइयों अब तो नींद से जागो। अपने देश की सब प्रकार से उन्नति करो जिससे तुम्हारी भलाई हो वैसी ही किताब पढ़ो।' यह कथन किस निबंध से लिया गया है?
(a) वैष्णवता और भारतवर्ष
(b) आप
(c) भारतवर्षोन्नति कैसे हो सकती है
(d) शिव शंभु के चिट्ठे

**Ans. (c) :** उपर्युक्त कथन भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के निबन्ध 'भारतवर्षोन्नति कैसे हो सकती है' से लिया गया है।
**भारतेन्दु हरिश्चंद्र के निबंध:-** 1. मणिकर्णिका, 2. कश्मीर कुसुम, 3. बादशाह दर्पण, 4. वैष्णवता और भारतवर्ष, 5. भारत वर्षोन्नति कैसे हो सकती है?, 6. बसंत, 7. बद्रीनाथ की यात्रा।
**प्रताप नारायण मिश्र के निबंध:-** 1. प्रताप पीयूष, 2. प्रताप समीक्षा, 3. मनोयोग, 4. धोखा, 5. बात, 6. आप, 7. भौं, 8. मुच्छ, 9. परीक्षा।
**बालमुकुंद गुप्त के निबंध:-** 1. शिवशंभु के चिट्ठे, 2. चिट्ठे और खत, 3. खेल तमाशा।

13. 'श्रद्धा ग्रहण करने की भी एक विधि होती है। मुझ से अभी सहज ढंग से श्रद्धा ग्रहण नहीं होती। अटपटा जाता हूँ। अभी 'पार्टटाइम' श्रद्धेय ही हूँ। यह कथन किस निबंध से लिया गया है?
(a) श्रद्धा और भक्ति (b) आचरण की सभ्यता
(c) विकलाँग श्रद्धा का दौर (d) धर्म और समाज

**Ans. (c) :** उपर्युक्त कथन हरिशंकर परसाई के निबन्ध 'विकलांग श्रद्धा का दौर' (1980 ई.) निबंध से लिया गया है। इनके अन्य निबन्ध - पगडंडियों का जमाना (1966 ई.), सदाचार का ताबीज (1967 ई.), ठिठुरता हुआ गणतंत्र (1970 ई.), सुनो भाई साधो (1983 ई.), तुलसीदास चंदन घिसे (1986 ई.) आदि हैं।

14. 'मनुष्य ही साहित्य का लक्ष्य है।' यह किस आलोचक की स्थापना है?
(a) आचार्य रामचंद्र शुक्ल
(b) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
(c) डॉ. राम विलास शर्मा
(d) डॉ. नामवर सिंह

**Ans. (b) :** आलोचक तथा उनके कथन निम्न हैं–

| कथन | आलोचक |
|---|---|
| • "मनुष्य ही साहित्य का लक्ष्य है" | – आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी |
| • "हमें अपनी दृष्टि से दूसरें देशों के साहित्य को देखना होगा, दूसरे देशों की दृष्टि से अपने साहित्य को नही।" | – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल |
| • "चरम व्यक्तिवाद ही प्रयोगवाद का केन्द्र बिन्दु है।" | – डॉ. नामवर सिंह |
| • "भक्ति -आन्दोलन एक जातीय और जनवादी आन्दोलन है।" | – डॉ. रामविलास शर्मा |

15. 'कुत्ते की आवाज़' रपट किस कृति में संकलित है ?
(a) मेरा परिवार (b) अकेला मेला
(c) ऋणजल-धन जल (d) चीड़ों पर चाँदनी

**Ans. (c) :** फणीश्वर नाथ 'रेणु' कृत 'ऋणजल-धन जल' रिपोर्ताज में 'कुत्ते की आवाज' रपट संकलित है। इसका प्रकाशन 1977 ई0 में हुआ था। इनके अन्य रिपोर्ताज – नेपाली क्रांति कथा (1976 ई.), श्रुत-अश्रुत पूर्व (1984 ई0), एकलव्य के नोट्स आदि हैं।

16. 'ब्रेख्त और एक उदासनगर' शीर्षक अध्याय किस पुस्तक में है?
(a) सुधिया उस चंदन के वन की
(b) याद हो कि न याद हो
(c) चीड़ों पर चाँदनी
(d) अपनी खबर

**Ans. (c) :** 'ब्रेख्त और एक उदासनगर' शीर्षक अध्याय 'चीड़ों पर चाँदनी' पुस्तक में है। 'चीड़ों पर चाँदनी' यात्रा साहित्य के लेखक निर्मल वर्मा हैं। जबकि 'सुधिया उस चंदन के वन की' (संस्मरण) विष्णुकांत शास्त्री का, 'याद हो कि न याद हो' (संस्मरण) काशीनाथ सिंह का तथा 'अपनी खबर' (आत्मकथा) पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' की है।

17. विष्णु प्रभाकर को 'आवारा मसीहा' लिखने में कितने वर्ष लगे ?
(a) ग्यारह वर्ष (b) बारह वर्ष
(c) तेरह वर्ष (d) चौदह वर्ष

**Ans. (d) :** 'आवारा मसीहा' विष्णु प्रभाकर द्वारा रचित प्रसिद्ध बांग्ला लेखक'शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय' की जीवनी है। इस कृत को लिखने में चौदह वर्ष का समय लगा। इसका प्रथम प्रकाशन मार्च 1974 ई. में हुआ।

18. किस विद्वान ने सर्वप्रथम आर्य भाषाओं के अध्ययन की ओर भाषा वैज्ञानिकों का ध्यान आकृष्ट किया ?
(a) विलियम जोन्स (b) ग्रियर्सन
(c) बीम्स (d) हार्नले

**Ans. (a) :** भारतीय आर्यभाषा के अध्ययन की ओर भाषा-वैज्ञानिकों का ध्यान आकृष्ट करने का श्रेय 'सर विलियम जोन्स' (1786) को है। उन्होंने सम्पूर्ण भारत की भाषाओं का अध्ययन किया और 1784 ई. में 'बंगाल एशियाटिक सोसाइटी' की स्थापना की, जिससे भारत के इतिहास, पुरातत्व, विशेषकर साहित्य और विधि शास्त्र संबंधी अध्ययन की नीव पड़ी।

19. किस भाषा को प्राकृत और आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं के बीच की कड़ी कहा जाता है?
(a) मैथिली (b) अपभ्रंश
(c) तमिल (d) तेलगू

**Ans. (b) :** अपभ्रंश भाषा को प्राकृत और आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं के बीच की कड़ी कहा जाता है। भाषा के अर्थ में इसका प्रयोग छठी शती से होने लगा था।
अपभ्रंश मध्यकालीन आर्य भाषा की तीसरी अवस्था है। 'मैथिली' बोली का विकास बिहारी हिन्दी उपभाषा से हुआ है।

**20. हिन्दी की मूल उत्पत्ति किस अपभ्रंश से मानी जाती है**

(a) मागधी अपभ्रंश (b) शौरसेनी अपभ्रंश
(c) अर्द्धमागधी अपभ्रंश (d) पैशाची अपभ्रंश

**Ans. (b) :** हिन्दी की मूल उत्पत्ति शौरसेनी अपभ्रंश से मानी जाती है। प्रमुख अपभ्रंश एवं उनसे विकसित उपभाषाएं हैं–

| **अपभ्रंश** | **उपभाषा** |
|---|---|
| शौरसेनी | पश्चिमी हिन्दी, राजस्थानी हिन्दी, गुजराती |
| खस | पहाड़ी हिन्दी |
| अर्द्धमागधी | पूर्वी हिन्दी |
| मागधी | बिहारी हिन्दी |

**21. बघेली बोली को अवधी की 'दक्षिणी शाखा' किसने कहा ?**

(a) हरदेव बाहरी (b) कामता प्रसाद गुरु
(c) भोलानाथ तिवारी (d) जार्ज ग्रियर्सन

**Ans. (a) :** 'हरदेव बाहरी' ने बघेली बोली को अवधी की 'दक्षिणी-शाखा' कहा है। बाबूराम सक्सेना 'बघेली' को अवधी की ही एक उपबोली मानते हैं अवधी, बघेली तथा छत्तीसगढ़ी बोली पूर्वी हिन्दी के अन्तर्गत आती हैं।

**बघेली बोली की प्रमुख विशेषताएंः-**

- अवधी का 'व' बघेली में 'ब' हो जाता है।
- विशेषणों में 'हा' प्रत्यय का प्रयोग अधिक होता है।
- बघेली में अधिकांशतः आदिवासियों की शब्दावली प्रयुक्त होती है।
- इसकी मुख्य बोलियाँ तिरहारी, जुड़ार, गहोरा आदि हैं।

**22. 'ब्रजबुलि' किस भाषा का एक कृत्रिम रूप है ?**

(a) असमी (b) ब्रजभाषा
(c) भोजपुरी (d) बँगला

**Ans. (d) :** 'ब्रजबुलि' बँगला भाषा का एक कृत्रिम रूप है। बंगाली कवि ईश्वरचन्द्र गुप्त ने 'ब्रजबुलि' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग किया था।
'ब्रजबुलि' की उत्पत्ति 'अवहट्ट' से हुई। माना जाता हैं इस भाषा में कृष्ण की लीलाओं का वर्णन है। अतः कृष्ण की लीलाभूमि 'ब्रज' के साथ इसका संबंध जोड़ इस भाषा को 'ब्रजबोली' समझा गया होगा जो बाँग्ला के उच्चारण की विशिष्टता के कारण 'ब्रजबुलि' बन गया होगा।
'ब्रजभाषा' पश्चिमी हिन्दी की उपबोली तथा 'भोजपुरी' पूर्वी हिन्दी की उपबोली है।

**23. उच्चारण स्थान के आधार पर 'छ' ध्वनि कैसी ध्वनि है?**

(a) ओष्ठ्य (b) दंतोष्ठ्य
(c) तालव्य (d) जिह्वा मूलीय

**Ans. (c) :** उच्चारण के आधार पर 'छ' तालव्य ध्वनि है।

| **उच्चारण स्थान** | **सूत्र** | **वर्ग** |
|---|---|---|
| कंठ्य | अकुह विसर्जनीयानां | अ, आ और विसर्ग (:) तथा 'क' वर्ग एवं ह |
| तालव्य | इचुयशानां तालुः | इ, ई तथा 'च' वर्ग एवं य, श |
| मूर्धन्य | ऋटुरषाणां मूर्धा | ऋ तथा 'ट' वर्ग एवं र, ष |
| दंत्य | ऌतुलसानां दन्ताः | 'त' वर्ग एवं ल, स |
| ओष्ठ्य | उपूपाध्मानीयानामोष्ठौ | उ, ऊ, तथा 'प' वर्ग |

**24. राजभाषा आयोग की सिफारिशों पर विचार करने के लिए संसदीय समिति का गठन, किस अनुच्छेद के अन्तर्गत किया गया है ?**

(a) 343 (b) 344
(c) 351 (d) 345

**Ans. (b) :** राजभाषा आयोग की सिफारिशों पर विचार करने के लिए संसदीय समिति का गठन, अनुच्छेद 344 के अन्तर्गत किया गया है। जबकि अनुच्छेद 343 के अन्तर्गत 'संघ की राजभाषा' एवं अनुच्छेद 345 के अन्तर्गत 'राज्यों की राजभाषा या राजभाषाएँ ' तथा अनुच्छेद 351 के अन्तर्गत हिन्दी भाषा के विकास के लिए निर्देश है।

**25. नागरी लिपि का विकास किस लिपि से हुआ है?**

(a) सैंधव लिपि (b) खरोष्ठी लिपि
(c) यूनानी लिपि (d) ब्राह्मी लिपि

**Ans. (d) :** नागरी लिपि का विकास 'ब्राह्मी लिपि' से हुआ है। ब्राह्मी लिपि भारत की प्राचीनतम लिपियों में से एक है। इसके प्रयोग के प्राचीन उदाहरण अशोक के अभिलेखों के रूप में उपलब्ध हैं। यह बाएं से दाएं लिखी जाती है।
* ब्राह्मी की उत्तरी शैली से 4-5वीं सदी में 'गुप्त लिपि' तथा गुप्त लिपि से छठी सदी में 'कुटिल लिपि' विकसित हुई है। इसी कुटिल लिपि से 9वीं सदी के लगभग नागरी के प्राचीन रूप का विकास हुआ। जिसे 'प्राचीन नागरी' कहते हैं।

**26. प्राचीन नागरी का दक्षिण भारत में क्या नाम है?**

(a) देवनागरी (b) आनन्दनागिरी
(c) नान्देनागरी (d) ब्रह्मनागरी

**Ans. (c) :** प्राचीन नागरी का दक्षिण भारत में 'नान्देनागरी' नाम है। भारत की प्राचीन लिपि ब्राह्मी का प्रयोग 5 वीं सदी ई.पू. से लेकर 350 ई. तक होता रहा। इसके बाद दो शैलियों का विकास हुआ- (1) उत्तरी शैली (2) दक्षिणी शैली।
उत्तरी शैली से चौथी सदी में गुप्त लिपि का विकास हुआ जो आठवीं सदी तक प्रयुक्त होती रही। नवीं सदी के लगभग नागरी के प्राचीन रूप का विकास हुआ, जिसे प्राचीन नागरी कहते हैं। प्राचीन नागरी का क्षेत्र उत्तर भारत माना जाता है, किंतु दक्षिण भारत के कुछ भागों में भी यह मिलती है। दक्षिण भारत में इसका नाम 'नागरी' न होकर 'नान्देनागरी' है।

**27. 'उदन्त मार्तण्ड' पत्र में खड़ी बोली का उल्लेख किस नाम से किया गया है?**

(a) हिन्दुस्तानी भाषा (b) पूर्वी भाषा
(c) मध्यदेशीय भाषा (d) प्राच्यदेशीय भाषा

**Ans. (c) :** 'उदन्त मार्तण्ड' पत्र में खड़ी बोली का उल्लेख 'मध्यदेशीय भाषा' नाम से किया गया है। 'उदन्त मार्तण्ड' हिन्दी का प्रथम सामचार पत्र है। इसके सम्पादक कानपुर निवासी पं जुगल किशोर हैं। इसका प्रकाशन कलकत्ता से साप्ताहिक पत्र के रूप में 30 मई, 1826 से हुआ।
30 मई इसके प्रकाशन दिन को आधार मानकर 'राष्ट्रीय हिंदी पत्रकारिता दिवस' मनाया जाता है।

**28. 'हिन्दी प्रदीप' के संपादक कौन थे?**

(a) श्रीनिवासदास (b) बालकृष्ण भट्ट
(c) दुर्गाप्रसाद मिश्र (d) बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमधन'

**Ans. (b) :** 'हिन्दी प्रदीप' के सम्पादक बालकृष्ण भट्ट थे। यह 1877 ई. में मासिक पत्रिका के रूप में प्रयाग से प्रकाशित होती थी। हिंदी के प्रमुख पत्र व उनके संपादक हैं–

| पत्र/पत्रिका | संपादक | वर्ष | प्रकार | स्थान |
|---|---|---|---|---|
| सदादर्श | श्रीनिवासदास | 1974 | मासिक | काशी |
| उचितवक्ता | दुर्गा प्रसाद मिश्र | 1878 | साप्ताहिक | कलकत्ता |
| आनन्द कादंबिनी | बदरी नारायण चौधरी | 1881 | मासिक | मिर्जापुर |
| भारतेन्दु | पं. राधाचरण गोस्वामी | 1882 | मासिक | वृन्दावन |

**29. हिन्दी के प्रचार प्रसार में योगदान के लिए 1947 में कौन सी संस्था गठित हुई थी ?**

(a) नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
(b) बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना
(c) हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
(d) राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा

**Ans. (b) :** हिन्दी के प्रचार-प्रसार करने वाली प्रमुख सहित्यिक संस्थाएं–

| साहित्यिक संस्था | स्थापना वर्ष |
|---|---|
| बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना | 1947 ई. |
| नागरी प्रचारिणी सभा, काशी | 1893 ई. |
| दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास | 1927 ई. |
| हिन्दी विद्यापीठ, देवघर | 1929 ई. |
| हिन्दुस्तानी अकादमी, प्रयाग | 1927 ई. |
| राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा | 1936 ई. |

**30. महावीर प्रसाद द्विवेदी से पूर्व 'सरस्वती' पत्रिका के संपादक कौन थे ?**

(a) राधाकृष्ण दास (b) किशोरीलाल गोस्वामी
(c) श्याम सुंदरदास (d) जगन्नाथ दास

**Ans. (c) :** महावीर प्रसाद द्विवेदी से पूर्व 'सरस्वती' पत्रिका के संपादक 'श्याम सुंदरदास' थे।
सरस्वती पत्रिका का प्रथम अंक 1 जनवरी, 1900 ई. को निकला। सरस्वती पत्रिका का प्रकाशन 'इंडियन प्रेस', इलाहाबाद (प्रयाग) से तथा संपादन कार्य काशी (वाराणसी) में होता था। आचार्य शुक्ल ने सरस्वती के संपादक महावीरप्रसाद द्विवेदी के संदर्भ में कहा है- ''सरस्वती के संपादक के रूप में उन्होंने आई हुई पुस्तकों के भीतर व्याकरण और भाषा की अशुद्धियाँ दिखाकर लेखकों को बहुत कुछ सावधान कर दिया।''

**31. 'ए स्केच ऑन हिन्दी लिटरेचर' के लेखक कौन हैं?**

(a) एफ. ई. के. (b) जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन
(c) मौलवी करीम उद्दीन (d) इडविन ग्रीब्ज

**Ans. (d) :** 'ए स्केच ऑन हिन्दी लिटरेचर' (1917 ई.) के लेखक एडविन ग्रीब्ज हैं। साहित्येतिहास संबंधी प्रमुख ग्रंथ एवं ग्रंथकार निम्न हैं-

| ग्रंथ | ग्रंथकार |
|---|---|
| ए हिस्ट्री ऑफ हिन्दी लिटरेचर (1920 ई.) | - एफ. ई. के. |
| तजकिरा-ई-शुअरा-ई-हिन्दी (1848 ई.) | - मौलवी करीमुद्दीन |
| द मॉडर्न वर्नाक्यूलर लिटरेचर ऑफ नॉर्दर्न हिन्दुस्तान (1888 ई.) | -जॉर्ज ग्रियर्सन |

**32. 'ढोला मारू रा दूहा' में ढोला के पिता का क्या नाम है?**

(a) राजा जसवंतसिंह (b) राजा नल
(c) राजा जयसिंह (d) राजा हरराजसिंह

**Ans. (b) :** 'ढोला मारू रा दूहा' में ढोला के पिता नाम 'राजा नल' है। 'ढोला मारू रा दूहा' 11वीं शती में रचित कवि 'कल्लोल' की रचना है। इसमें राजकुमार 'ढोला', 'राजकुमारी मारू' तथा राजकुमारी 'मारवणी' की प्रेम कथा है। यह लोक प्रचलित प्रेमकथा है, जो राजस्थान में अधिक लोकप्रिय है। यह मूलतः दोहे में रचित है, जिसमें कवि कुशलराय ने 17वीं शती में कुछ चौपाइयाँ जोड़ी हैं।

**33. 'गोरखनाथ का समय ग्यारहवीं शती है।' यह मान्यता किस विद्वान की है?**

(a) राहुल सांकृत्यायन
(b) डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी
(c) आचार्य रामचंद्र शुक्ल
(d) डॉ. पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल

**Ans. (d) :** 'गोरखनाथ का समय ग्यारहवीं शती है।' यह मान्यता 'डॉ. पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल' की है। मिश्र बन्धुओं नें इन्हें हिन्दी का प्रथम गद्य लेखक माना है। डॉ. पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल ने 'गोरखबानी' का सम्पादन 14 ग्रन्थों को प्रामाणिक मानकर किया है। गोरखनाथ मत्स्येन्द्रनाथ के शिष्य थे।

**34. 'नाथपंथ सिद्धों की परम्परा से ही छँटकर निकला है।' यह कथन किसका है?**

(a) डॉ. रामकुमार वर्मा

(b) राहुल सांकृत्यायन

(c) शिवसिंह सेंगर

(d) आचार्य रामचंद्र शुक्ल

**Ans. (d) :** 'नाथपंथ सिद्धों की परम्परा से ही छँटकर निकला है।' उक्त कथन आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का है। शुक्ल जी ने अपनी पुस्तक 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' के आदिकाल-प्रकरण-2 में कहा है, ''जिस प्रकार सिद्धों की संख्या 'चौरासी' प्रसिद्ध है, उसी प्रकार नाथों की संख्या 'नौ'।'' 'गोरक्षसिद्धान्त संग्रह' के अनुसार नव नाथों के नाम निम्न हैं- (1) नागार्जुन, (2) जड़भरत, (3) हरिश्चंद्र, (4) सत्यनाथ, (5) भीमनाथ, (6) गोरक्षनाथ, (7) चर्पट, (8) जलंधर, (9) मलयार्जुन।

**35. दक्षिण के अलवार संत किस शाखा से संबंधित माने जाते हैं?**

(a) प्रेम मार्गी (b) ज्ञान मार्गी

(c) राम भक्ति शाखा (d) कृष्ण भक्ति शाखा

**Ans. (c) :** दक्षिण के आलवार संत 'राम भक्ति शाखा' से संबंधित माने जाते हैं। दक्षिण में आलवार संतों की वाणी से रामभक्ति प्रस्फुटित हुई। ये मुख्य रूप से विष्णु के भक्त थे। आलवार का शाब्दिक अर्थ 'मग्न' (भगवान की भक्ति में डूबा हुआ) होता है। आलवार संतों की संख्या 12 है, जो निम्न हैं-

| आलवार संत | अवतार |
|---|---|
| मोयगै आलवार | पाञ्चजन्य (विष्णु का शंख) |
| भूतन्तालवार | कौमोदकी |
| पैयालवार | नन्दक (विष्णु की तलवार) |
| तिरूमालिसै आलवार | सुदर्शन चक्र |
| नम्मालवार | विश्वकसेन (विष्णु के सेनापति) |
| मधुकवि आलवार | गरूड़ |
| कुलशेखरालवार | कौस्तुभ मणि |
| पेरियालवार | गरूड़ |
| आण्डाल (महिला आलवार) | भूदेवी (विष्णु पत्नी तथा पृथ्वी देवी) |
| तोण्डरडिप्पोडियालवार | वैजयंती (विष्णु की माला) |
| तिरूप्पाणालवार | श्री वत्सल |
| तिरूमंगैआलवार | शारंग (विष्णु का धनुष) |

**36. तुलसीदास की निम्नलिखित कृतियों में कौन सी कृति कांडों में विभाजित नहीं है?**

(a) पार्वती मंगल (b) बरवै रामायण

(c) गीतावली (d) कवितावली

**Ans. (a) :** तुलसीदास कृति 'पार्वती मंगल' कांडों मे विभाजित नहीं है बल्कि यह प्रबंध काव्य है। यह अवधी में रचित है। इसमें शिव-पार्वती विवाह का वर्णन है, इसका आधार कालिदास कृत 'कुमारसंभवम्' है जबकि रामचरितमानस में शिव-पार्वती कथा का आधार ''शिव पुराण'' है।

**बरवै रामायण –** यह सात काण्डों में विभाजित है। यह ग्रंथ रहीम के 'बरवै नायिका भेद' से प्रभावित है।

**गीतावली –** यह सात काण्डों में विभाजित है, इसमे राम कथा का वर्णन है। यह राम गीतावली या पदावली रामायण के नाम से भी प्रसिद्ध है।

**कवितावली –** इसमें रामकथा सात काण्डों में है। कवितावली में काशी की महामारी का वर्णन 'उत्तरकाण्ड' में किया गया है, हनुमानबाहुक इसी का अंश माना जाता है।

**37. श्री रामानुजाचार्य की भक्ति किस भाव की है ?**

(a) दास्यभाव (b) साख्यभाव

(c) दाम्पत्यभाव (d) इनमें से कोई नहीं

**Ans. (a) :** श्री रामानुजाचार्य की भक्ति दास्यभाव की है। रामानुजाचार्य ने 'अद्वैत वेदान्त' का खण्डन कर 'विशिष्टाद्वैतवाद' की स्थापना की, जिसके अनुसार ब्रह्म के ही अंश जगत के सारे प्राणी हैं। रामानुजाचार्य को शेष या लक्ष्मण का अवतार माना जाता है।

**38. 'रसलीन' का मूल नाम क्या है ?**

(a) सैय्यद मुस्तफा (b) मुहम्मद सईद

(c) सईद अहमद (d) सैय्यद गुलाम नबी

**Ans. (d) :** 'रसलीन' का मूलनाम 'सैय्यद गुलाम नबी' है ये रीतिकाल के 'रीतिबद्ध' शाखा के कवि हैं। प्रमुख रूप से इनकी दो रचनाएँ हैं– अंगदर्पण, रसप्रबोध। अंग दर्पण में अंगो का, उपमा उत्प्रेक्षा से युक्त चमत्कारपूर्ण वर्णन है और रसप्रबोध दोहों में रसनिरूपण सम्बंधी ग्रंथ है।

**39. 'भारतेन्दु की अकेली प्रतिभा ने हिन्दी नाटक साहित्य, हिन्दी नाट्यशास्त्र तथा हिन्दी रंगमंच की स्थापना की।' यह कथन किसका है ?**

(a) आचार्य रामचंद्र शुक्ल

(b) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

(c) डॉ. रामविलास शर्मा

(d) डॉ. रामचंद्र तिवारी

**Ans. (d) :** उपर्युक्त कथन रामचन्द्र तिवारी का है जबकि रामचन्द्र शुक्ल ने भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के नाटकों के सम्बन्ध में कहा है – ''नाटकों की रचना शैली में उन्होनें मध्यममार्ग का अवलम्बन किया। ना तो बांग्ला के नाटकों की तरह प्राचीन भारतीय शैली को एक बारगी छोड़ ये अंग्रेजी नाटकों की नकल पर चले और ना प्राचीन नाट्यशास्त्र की जटिलता मे अपने को फँसाया।''

**40. सुमित्रानन्दन पंत ने अपने किस काव्य-संग्रह को 'बाल कल्पना का दुधमुँहा प्रयास' कहा है?**

(a) पल्लव (b) ग्रंथि
(c) वीणा (d) उच्छ्वास

**Ans. (c) :** सुमित्रानंदन पंत ने 'वीणा' काव्य संग्रह को 'बाल कल्पना का दुधमुँहा प्रयास' कहा है।
पंत जी की काव्य कृति 'पल्लव' की भूमिका को "छायावाद का घोषणा पत्र (मेनीफेस्टो)" कहा जाता है।
उन्होंने अपनी रचना 'सत्यकाम' (1975) को "एक तापस की भावनाओं को वाणी देने वाला काव्य" कहा है।
उच्छवास (1920), ग्रंथि (1920), वीणा (1927), पल्लव (1928), गुंजन (1932) पंत जी की छायावादी रचनाएँ हैं।

**41. 'दूसरा सप्तक' का प्रकाशन वर्ष क्या है ?**

(a) 1951 ई. (b) 1952 ई.
(c) 1950 ई. (d) 1960 ई.

**Ans. (a) :** दूसरा सप्तक का प्रकाशन वर्ष '1951 ई.' है जबकि तारसप्तक का प्रकाशन वर्ष 1943 ई. है। अज्ञेय ने चार सप्तकों का प्रकाशन किया। इन चारों सप्तकों में सात-सात प्रयोगवादी कवियों की कविताएँ संगृहीत हैं। प्रयोगवाद शब्द का प्रथम प्रयोग नन्ददुलारे वाजपेयी ने 'प्रयोगवादी रचनाएँ' शीर्षक निबन्ध में किया।
चारों सप्तकों में शामिल कवि इस प्रकार हैं-
**तारसप्तक (1943)-** अज्ञेय, रामविलास शर्मा, मुक्तिबोध, प्रभाकर माचवे, नेमिचन्द्र जैन, गिरिजा कुमार माथुर, भारतभूषण अग्रवाल।
**दूसरा सप्तक (1951)-** शमशेर बहादुर सिंह, भवानी प्रसार मिश्र, शकुन्त माथुर, हरिनारायण घनश्याम व्यास, नरेश मेहता, धर्मवीर भारती, रघुवीर सहाय।
**तीसरा सप्तक (1959)-** प्रयाग नारायण त्रिपाठी, मदन वात्स्यायन, विजयदेव नारायण साही, कुँवर नारायण, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, केदारनाथ सिंह, कीर्ति चौधरी।
**चौथा सप्तक (1979)-** अवधेश कुमार, राजकुमार कुंभज, स्वदेश भारती, नंदकिशोर आचार्य, सुमन राजे, श्रीराम वर्मा, राजेन्द्र किशोर।

**42. 'किले में औरत' किस कवि की कविता है?**

(a) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना (b) पवन करण
(c) रघुवीर सहाय (d) अरुण कमल

**Ans. (c) :** 'किले में औरत' रघुवीर सहाय की कविता है। यह कविता मूलतः कविवर रघुवीर सहाय के काव्य संग्रह 'हँसो-हँसो जल्दी हँसो' (1975) में संकलित है। इनकी अन्य कविताएं-सीढ़ियों पर धूप में (1960), आत्महत्या के विरुद्ध (1967), कुछ पते कुछ चिट्ठियाँ (1989), एक समय था (1995) आदि हैं।

**43. डॉ. गोपाल राय ने किस कृति को हिन्दी का पहला उपन्यास माना है?**

(a) परीक्षा गुरु (b) भाग्यवती
(c) देवरानी जेठानी की कहानी (d) वामा शिक्षक

**Ans. (c) :** डॉ. गोपालराय ने 'देवरानी जेठानी की कहानी' को हिन्दी का पहला उपन्यास माना है। 'देवरानी जेठानी की कहानी' उपन्यास (1870 ई.) पं. गौरीदत्त की रचना है। जबकि श्रद्धाराम फिल्लौरी के उपन्यास भाग्यवती (1877 ई.) को डॉ. विजय शंकर मल्ल ने प्रथम उपन्यास माना है तथा श्रीनिवासदास कृत परीक्षागुरु (1882 ई.) को आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने हिन्दी का प्रथम उपन्यास माना है। 'वामा शिक्षक' (1872) ईश्वरी प्रसाद व कल्याण राय द्वारा रचित उपन्यास है।

**44. 'फाँस' उपन्यास का मूल कथ्य क्या है ?**

(a) गरीब-अमीर का संघर्ष (b) किसान-आत्महत्या
(c) स्त्री-संघर्ष (d) दलित संघर्ष

**Ans. (b) :** 'फाँस' उपन्यास का मूल कथ्य 'किसान-आत्महत्या' है। यह 'संजीव' द्वारा रचित उपन्यास है। संजीव द्वारा लिखित अन्य उपन्यास -किशनगढ़ के अहेरी (1981), सर्कस (1984), धार (1990), सावधान! नीचे आग है (1986), जंगल जहाँ शुरु होता है (2000) आदि हैं।

**45. 'सचेतन कहानी' की अवधारणा किस कहानीकार की है**

(a) मोहन राकेश (b) कमलेश्वर
(c) राजेन्द्र यादव (d) महीप सिंह

**Ans. (d) :** 'सचेतन कहानी' (1964) की अवधारणा महीप सिंह की है। जबकि नयी कहानी (1956 ई.) की अवधारणा के प्रर्वतक 'राजेन्द्र यादव, मोहन राकेश तथा कमलेश्वर हैं।

**46. निम्नलिखित नाटक एवं नाटककारों को सुमेलित कीजिए ।**

(A) अभंगगाथा (i) विभु कुमार
(B) ताले में बंद प्रजातंत्र (ii) असगर वज़ाहत
(C) वायरस (iii) नरेन्द्र मोहन
(D) इन्ना की आवाज़ (iv) राजेश जैन

| | A | B | C | D |
|---|---|---|---|---|
| (a) | (iii) | (i) | (iv) | (ii) |
| (b) | (iv) | (i) | (iii) | (ii) |
| (c) | (i) | (ii) | (iii) | (iv) |
| (d) | (iii) | (ii) | (iv) | (i) |

**Ans. (a) :** नाटक एवं नाटककारों का सही सुमेलन इस प्रकार है-

| **नाटक** | | **नाटककार** |
|---|---|---|
| अभंग-गाथा | - | नरेन्द्र मोहन |
| ताले में बंद प्रजातंत्र | - | विभु कुमार |
| वायरस | - | राजेश जैन |
| इन्ना की आवाज | - | असगर वज़ाहत |

**47. 'भारत दुर्दशा' को निम्नलिखित में से क्या माना जाता है?**

(a) नाटिका (b) नाट्य रासक
(c) प्रहसन (d) गीति रूपक

Ans. (b) : भारतेन्दु हरिश्चन्द्र कृत 'भारत दुर्दशा' (1880 ई.) को 'नाट्य रासक' माना जाता है। भारतेन्दु की प्रमुख रचनाएँ हैं - वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति (प्रहसन), विषस्य विषमौषधम् (भाण), प्रेमजोगिनी (नाटिका), नीलदेवी (गीतिरूपक), अंधेर नगरी (प्रहसन), सती प्रताप (पौराणिक नाटक)।

**48. 'सौभाग्य और दुर्भाग्य मनुष्य की दुर्बलता के नाम हैं।' यह किसका कथन है?**

(a) ध्रुवस्वामिनी (b) कोमा
(c) शकराज (d) चन्द्रगुप्त

Ans. (c) : 'सौभाग्य और दुर्भाग्य मनुष्य की दुर्बलता के नाम हैं।'-यह कथन ध्रुवस्वामिनी नाटक के प्रमुख पात्र 'शकराज' का है। ध्रुवस्वामिनी नाटक के लेखक जयशंकर प्रसाद हैं ।
जयशंकर प्रसाद के नाटक- स्कन्दगुप्त (1928 ई.), चन्द्रगुप्त (1931 ई.), ध्रुवस्वामिनी (1933 ई.) आदि हैं।
प्रसाद के नाटकों के प्रमुख पात्र एवं उनके कथन निम्न हैं-

| कथन | पात्र |
|---|---|
| 'यौवन! तेरी चंचल छाया' | कोमा (ध्रुवस्वामिनी) |
| ''विधान की स्याही का एक बिन्दु गिरकर भाग्य-लिपि पर कालिमा चढ़ा देता है''। | चन्द्रगुप्त |
| ''कुछ नही, मै केवल यही कहना चाहती हूँ कि पुरुषों ने स्त्रियों को अपनी पशु-सम्पत्ति समझकर उन पर अत्याचार करने का जो अभ्यास बना लिया है वह मेरे साथ नहीं चल सकता।'' | ध्रुवस्वामिनी |

**49. 'लंका की एक रात' के निबंधकार कौन हैं ?**

(a) विद्यानिवास मिश्र (b) कुबेरनाथ राय
(c) बालकृष्ण भट्ट (d) हजारी प्रसाद द्विवेदी

Ans. (b) : 'लंका की एक रात' के निबंधकार 'कुबेरनाथ राय' हैं। कुबेरनाथ राय रसधर्मा ललित निबंधकर हैं। इनके अन्य निबन्ध संग्रह- प्रिया नीलकण्ठी (1968 ई.), विषाद योग (1973 ई.), वाणी का क्षीर सागर (1998 ई.) आदि।
**विद्यानिवास मिश्र के निबंध :** तुम चंदन हम पानी (1957), वसंत आ गया पर कोई उत्कंठा नहीं (1972), छितवन की छाँह (1953)।
**बालकृष्ण भट्ट के निबंध :** कल्पना, शब्द की आकर्षण शक्ति, आत्मनिर्भरता (1893)।
**हजारीप्रसाद द्विवेदी के निबंध :** अशोक के फूल (1948) कल्पलता (1951), आलोक पर्व (1972)

**50. 'मिला तेज से तेज' किस विधा की रचना है?**

(a) संस्मरण (b) रेखाचित्र
(c) जीवनी (d) आत्मकथा

Ans. (c) : सुधा चौहान द्वारा रचित 'मिला तेज से तेज' जीवनी विधा की रचना है। सुभद्रा कुमारी चौहान की जीवनी उनकी पुत्री, सुधा चौहान ने लिखी है, जो 1975 ई. में प्रकाशित हुई।

**51. 'अपनी जमी अपना आसमां' की लेखिका कौन हैं ?**

(a) कौशल्या बैसंत्री (b) सुशीला टाकभौरे
(c) रजनी तिलक (d) रेखा कस्तवार

Ans. (c) : 'अपनी जमी अपना आसमां' की लेखिका रजनी तिलक हैं। यह 'आत्मकथा' विधा की रचना है, जो 2017 ई. में प्रकाशित हुई। जबकि 'सुशीला टाकभौरे' की आत्मकथा 'शिकंजे का दर्द' (2011 ई.) में प्रकाशित हुई।
कौशल्या बैंसती की आत्मकथा 'दोहरा अभिशाप' है।

**52. 'कछुआ धर्म' निबंध के लेखक कौन हैं ?**

(a) पद्मसिंह शर्मा (b) चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी'
(c) बालकृष्ण भट्ट (d) बालमुकुन्द गुप्त

Ans. (b) : 'कछुआ धर्म' तथा 'मारेसि मोहि कुठाव' शीर्षक महत्वपूर्ण निबन्ध के लेखक 'चन्द्रधर शर्मा गुलेरी' हैं।
निम्नलिखित रचनाकारों की रचनाएँ निम्न हैं-
**पद्म सिंह शर्मा-** मुझे मेरे मित्रों से बचाओ, दयानन्द सरस्वती मर गए, हिन्दी के प्राचीन साहित्य का उद्धार।
**बालकृष्ण भट्ट -** चन्द्रोदय, साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है, आत्मगौरव, भिक्षा वृत्ति, बाल-विवाह आदि।
**बालमुकुन्द गुप्त -** शिवशम्भु के चिट्ठे।

**53. 'आप हुदरी' किस साहित्यकार की आत्मकथा है?**

(a) कौशल्या बैसंती (b) कुसुम अंसल
(c) रमणिका गुप्ता (d) चित्रा मुद्गल

Ans. (c) : 'आपहुदरी' रमणिका गुप्ता की आत्मकथा है। इनकी एक और आत्मकथा 'हादसे' है, जबकि कौशल्या बैसंती की आत्मकथा 'दोहरा अभिशाप' है। कुसुम अंसल की आत्मकथा 'जो कहा नही गया' (1996 ई.) है।

**54. भरतमुनि के रससूत्र में प्रयुक्त 'निष्पत्ति' का अर्थ 'उत्पत्ति' किस आचार्य ने माना है ?**

(a) अभिनव गुप्त (b) भट्ट लोल्लट
(c) भट्ट नायक (d) शंकुक

Ans. (b) : भरतमुनि के रससूत्र में प्रयुक्त 'निष्पत्ति' का अर्थ 'उत्पत्ति' आचार्य भट्ट लोल्लट ने माना है।आचार्य भट्ट लोल्लट को भरत के रस-सूत्र का प्रथम व्याख्याता माना जाता है।
आचार्य शंकुक ने 'निष्पत्ति' का अर्थ 'अनुमिति' भट्टनायक ने 'भुक्ति' तथा अभिनव गुप्त ने 'अभिव्यक्ति' को माना है।

**55. किस आचार्य ने दृष्ट (प्रीति) और अदृष्ट (कीर्ति) को काव्य प्रयोजन माना है?**

(a) कुंतक (b) दण्डी
(c) वामन (d) रुद्रट

**Ans. (c) :** आचार्य वामन ने दृष्ट (प्रीति) और अदृष्ट (कीर्ति) को काव्य प्रयोजन माना है। जबकि आचार्य कुन्तक ने चतुर्वर्गफल प्राप्ति, व्यवहार ज्ञान तथा परमअह्लाद को, आचार्य दण्डी ने 'ज्ञान' एवं यश' प्राप्ति को और रूद्रट ने धर्म, कीर्ति, अनर्थोपशय अर्थ एवं सुख प्राप्ति को काव्य प्रयोजन माना है। काव्य प्रयोजन का तात्पर्य हैः- काव्य रचना का उद्देश्य।

**56. रीति के आधारभूत तत्व के रूप में वामन का कैसा दृष्टिकोण है?**

(a) विशुद्ध सौन्दर्यवादी (b) विशुद्ध शिल्पवादी
(c) विशुद्ध कथ्यवादी (d) विशुद्ध रसवादी

**Ans. (a) :** रीति के आधारभूत तत्व के रूप में वामन का दृष्टिकोण 'विशुद्ध सौन्दर्यवादी' है। वामन रीति सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य हैं। इनका समय विद्वानों ने आठवीं शती का उत्तरार्द्ध माना है। वामन ने 'काव्यालंकार सूत्र' नामक ग्रंथ की रचना सूत्रों में की है।
आचार्य वामन ने 'रीति' के तीन भेद तय किये हैं- वैदर्भी (ललिता) रीति, गौड़ी (परूषा) रीति, पाञ्चाली।

**57. चलती चाकी देख के, दिया कबीरा रोय**
**दो पाटन के बीच में, साबुत बचा न कोय॥**
**काव्यपंक्तियों में कौन सी शब्द शक्ति है?**

(a) अभिधा (b) लक्षणा
(c) व्यंजना (d) विलक्षणा

**Ans. (c) :** उपर्युक्त काव्य पंक्ति में 'व्यंजना' शब्द शक्ति है।
उक्त पंक्ति कबीरदास की है। यहाँ चलती चक्की को देखकर कबीरदास के दुःखी होने की बात कही गई है जिसके द्वारा यह अर्थ व्यंजित होता है कि संसार चक्की के समान है, जिसके जन्म और मृत्यु रूपी दो पाटों के बीच मनुष्य पिसता रहता है।
**शब्दशक्ति**- शब्दों के अर्थो का बोध कराने वाले अर्थ- व्यापार को शब्द शक्ति कहते हैं। शब्द शक्ति तीन प्रकार की होती हैं-
1. अभिधा, 2. व्यंजना, 3. लक्षणा।
**1. अभिधा–**जिसका सीधा सरल अर्थ पाठक को समझ में आ जाता है, उसे अभिधा शब्द शक्ति कहते हैं।
**2. व्यंजना–** जब किसी शब्द के अभिप्रेत अर्थ का बोध न तो मुख्यार्थ से होता है और न ही लक्ष्यार्थ से, बल्कि कथन के सन्दर्भ के अनुसार अलग-अलग अर्थ या व्यंग्यार्थ से हो, वहाँ व्यंजना शब्द शक्ति होती है। यह दो प्रकार की होती है।
1. शाब्दी व्यंजना 2. आर्थी व्यंजना।
**3. लक्षणा–** मुख्यार्थ में बाधा होने पर रूढ़ि या प्रयोजन के कारण जिस शक्ति के द्वारा मुख्यार्थ से सम्बन्धित अन्य अर्थ लक्षित हो वह लक्षणा है।

**58. लोन्जाइनस ने 'उदात्तता' का विवेचन किस ग्रंथ में किया है?**

(a) पोयटिक्स (b) मोरल फिलासफी
(c) ऑन द सब्लाइम (d) क्रिटिकल ऑबजर्वेशंस

**Ans. (c) :** लोन्जाइनस ने 'उदात्तता' का विवेचन 'ऑन द सब्लाइम' ग्रंथ में किया है। लोंजाइनस ने काव्य को श्रेष्ठ बताने वाले तत्वों पर विचार करते हुए इस सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। वे उदात्त को काव्य को श्रेष्ठ बनाने वाला तथा कवि को प्रतिष्ठा दिलाने वाला तत्व मानते हैं। इनका प्रमुख ग्रंथ 'पेरिइप्सुस' है।

**59. किस पाश्चात्य विचारक ने 'कला और सहजानुभूति' को अभिन्न माना है ?**

(a) बेनेदितो क्रोचे (b) आई. ए. रिचर्ड्स
(c) स्पिन गार्न (d) टी. एस. इलियट

**Ans. (a) :** बेनेदितो क्रोचे ने 'कला और सहजानुभूति' को अभिन्न माना है। इनके प्रमुख ग्रंथ हैं - ईस्थेटिक,न्यू एसेज आन एस्थेटिक आदि। क्रोचे प्रत्ययवादी दार्शनिक थे। ये आत्मवादी भी माने जाते हैं। क्रोचे आत्मा या चेतना की चार क्रियाएँ मानते हैं। इन्होने कला निर्माण में 'प्रतिभा' को मूल कारण माना है।

**60. 'नयी समीक्षा' के केन्द्र में कौन है?**

(a) कृतिकार (b) कृति
(c) समाज (d) युगीन परिस्थितियाँ

**Ans. (b) :** 'नयी समीक्षा' के केन्द्र में 'कृति' है। 'नयी समीक्षा' आधुनिक भावबोध से सम्पृक्त होती है। 'नयी समीक्षा' आज के परिवेश में व्याप्त विसंगति, तनाव, असहायता, निरूद्देश्यता, एकाकीपन, अजनबीपन, ऊब आदि का साक्षात्कार करते हुए एवं अस्मिता के संकर को झेलते हुए एक सीमा तक अनुभूति की प्रामाणिकता और व्यक्तित्व की अद्वितीयता को स्वीकार कर मानव मुक्ति का मार्ग खोजती है तथा रचना को भाषिक सर्जना मानकर काव्य-भाषा के विश्लेषण पर विशेष बल देती है।

**61. वस्तु, घटना व्यापार, गुण, विशेषता, विचार आदि साकार-निराकार पदार्थों और मानस क्रियाओं को कवि किसके द्वारा प्रत्यक्ष और इन्द्रिय ग्राह्य बनाता है?**

(a) मिथक के द्वारा (b) कल्पना के द्वारा
(c) प्रतीक के द्वारा (d) बिम्ब के द्वारा

**Ans. (d) :** वस्तु, घटना व्यापार, गुण, विशेषता, विचार आदि साकार-निराकार पदार्थों और मानस क्रियाओं को कवि बिम्ब के द्वारा प्रत्यक्ष और इन्द्रिय ग्राह्य बनाता है। बिम्ब शब्द अंग्रेजी के 'इमेज' का हिन्दी रूपान्तर है, इसका अर्थ है– 'मूर्त रूप प्रदान करना।' काव्य में बिम्ब को वह शब्द चित्र माना जाता है, जो कल्पना द्वारा ऐन्द्रिय अनुभवों के आधार पर निर्मित होता है। एक काव्यान्दोलन के रूप में बिम्बवाद' के प्रवर्तन का श्रेय अंग्रेजी कवि टी.ई. ह्यूम को है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल एफ.एस.फ्लिंट को बिम्बवाद का प्रवर्तक मानते हैं।

**62. 'प्रतीकवाद' की सर्वप्रथम घोषणा करने वाले विचारक कौन थे?**

(a) एमिल जोला (b) कीट्स
(c) जीन मोरे (d) जेम्स ज्वाइस

**Ans. (c) :** 'प्रतीकवाद' की सर्वप्रथम घोषणा करने वाले विचारक 'जीन मोरे' थे। सन् 1886 ई. में कवि जीन मोरे ने 'फिगारों' नामक पत्र में प्रतीकवाद का एक घोषणा पत्र प्रकाशित कराया। जिसमें उसने यह कहा कि ''प्रतीकवादी ही एक ऐसा शब्द है, जो कला में सर्जनात्मक प्रवृत्ति को भली भाँति व्यक्त करता है।''

**63. 'छायावाद' पुस्तक के लेखक कौन हैं?**

(a) रमेश चन्द्र शाह (b) डॉ. देवराज

(c) नामवर सिंह (d) नन्ददुलारे बाजपेयी

**Ans. (c) :** 'छायावाद' (1955 ई.) आलोचनात्मक पुस्तक के लेखक नामवर सिंह हैं। इनके द्वारा लिखित अन्य आलोचनात्मक ग्रंथ हैं- हिन्दी के विकास में अपभ्रंश का योग (1952), इतिहास और आलोचना (1957), कहानी : नयी कहानी (1964), कविता के नये प्रतिमान (1968), दूसरी परम्परा की खोज (1992), वाद-विवाद-संवाद (1989), आलोचक के मुख से (2005) आदि।

**डॉ. नगेन्द्र ने छायावाद के सम्बन्ध में कहा :** ''छायावाद उस राष्ट्रीय जागरण की काव्यात्मक अभिव्यक्ति है जो एक ओर पुरानी रूढ़ियों से मुक्ति चाहता था और दूसरी ओर विदेशी पराधीनता से।''

**64. 'जाति का विनाश' पुस्तक के लेखक का नाम क्या है?**

(a) सुरेन्द्र अज्ञात (b) चन्द्रिका प्रसाद जिज्ञासु

(c) कँवल भारती (d) डॉ. भीमराव अंबेडकर

**Ans. (d) :** 'जाति का विनाश' (1936) पुस्तक के लेखक डॉ. भीमराव अंबेडकर हैं। यह पुस्तक दलित वर्ग से सम्बंधित है। इनके द्वारा लिखित अन्य ग्रंथ हैं- जीवन और कार्य, जात-पात का विरोध, हिन्दू कोड बिल आदि।

**65. 'धर्मकथा', 'पुरावृत्त' या 'पुराकथा' के लिए आलोचना की शब्दावली में किस शब्द का प्रयोग किया जाता है?**

(a) मौखिक (b) देवकथा

(c) मिथास (d) मिथक

**Ans. (d) :** 'धर्मकथा', 'पुरावृत्त' या 'पुराकथा' के लिए आलोचना की शब्दावली में 'मिथक' शब्द का प्रयोग किया जाता है। प्राचीन पुराकथाओं का तत्व जो नवीन स्थितियों मे नये अर्थ का वहन करे, मिथक कहलाता है।

**66. 'सर्वोदय' और 'ट्रस्टीशिप' के सिद्धान्त किस दर्शन के आधार माने जाते हैं?**

(a) मार्क्सवाद (b) एकात्म मानववाद

(c) गाँधीवाद (d) लोकतांत्रिक समाजवाद

**Ans. (c) :** 'सर्वोदय' और 'ट्रस्टीशिप' के सिद्धान्त गाँधीवाद दर्शन के आधार माने जाते हैं। गाँधीवाद दर्शन न केवल राजनीतिक, नैतिक और धार्मिक है, बल्कि पारस्परिक, आधुनिक तथा सरल एवं जटिल भी है।

**67. ओमप्रकाश वाल्मीकि की आत्मकथा का नाम क्या है?**

(a) मुरदहिया (b) संताप

(c) उठाईगीर (d) जूठन

**Ans. (d) :** ओमप्रकाश वाल्मीकि की आत्मकथा 'जूठन' है। प्रमुख दलित साहित्यकार एवं उनकी आत्मकथाएँ हैं–

| **दलित साहित्यकार** | | **आत्मकथा** |
|---|---|---|
| तुलसीराम | - | मुर्दहिया (2010), मणिकर्णिका (2013) |
| सूरजपाल चौहान | - | तिरस्कृत (2002), संतप्त (2002) |
| माता प्रसाद | - | झोपड़ी से राजभवन (2002) |
| धर्मवीर | - | मेरी पत्नी और भेड़िया (2009) |

**'उठाईगीर'** लक्ष्मण गायकवाड़ के आत्मकथ्यात्मक उपन्यास 'उचल्या' (मराठी) का हिन्दी अनुवाद है। इसके अनुवादक सूर्यनारायण रणसुभे हैं।

**68. 'उन्होंने सामान्य हृदय तत्व की सृष्टि व्यापिनी भावना द्वारा मनुष्य और पशु पक्षी सबको एक जीवन सूत्र में बद्ध देखा है।'**

(a) तुलसीदास (b) सूरदास

(c) जायसी (d) घनानन्द

**Ans. (c) :** ''उन्होंने सामान्य हृदय तत्त्व की सृष्टि व्यापिनी भावना द्वारा मनुष्य और पशु पक्षी सबको एक जीवन सूत्र में बद्ध देखा है।'' यह कथन जायसी के बारे में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने कहा है। जायसी भक्तिकाल के प्रेमाश्रयी शाखा के प्रमुख कवि हैं। इनके द्वारा रचित ग्रंथ-पद्मावत, अखरावट, आखिरी कलाम आदि हैं।

**69. 'विद्यापति की कविता का स्थापत्य शृंगारिक है। उसे आध्यात्मिक कहना खजुराहो के मंदिरों को आध्यात्मिक कहना है ।' पंक्तियों के लेखक कौन हैं?**

(a) डॉ. बच्चन सिंह (b) डॉ. रामचन्द्र तिवारी

(c) डॉ. रामविलास शर्मा (d) डॉ. विष्णुकांत शास्त्री

**Ans. (a) :** ''विद्यापति की कविता का स्थापत्य शृंगारिक है। उसे आध्यात्मिक कहना खजुराहो के मंदिरों को आध्यात्मिक कहना है।'' उक्त पंक्तियों के लेखक डॉ. बच्चन सिंह हैं। इन्होंने विद्यापति को 'जातीय कवि' कहा है। इनके द्वारा लिखित प्रमुख ग्रंथ- 'आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास' तथा 'हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास' है।

**70. 'इसमें कोई संदेह नहीं कि कबीर को 'रामनाम' रामानन्द से प्राप्त हुआ पर आगे चलकर कबीर के राम रामानंद के राम से भिन्न हो गये।' यह किसका कथन है?**

(a) हजारी प्रसाद द्विवेदी (b) आचार्य रामचंद्र शुक्ल

(c) डॉ. रामकुमार वर्मा (d) परशुराम चतुर्वेदी

**Ans. (b) :** ''इसमें कोई संदेह नहीं कि कबीर को 'रामनाम' रामानन्द से प्राप्त हुआ पर आगे चलकर कबीर के राम रामानंद के राम से भिन्न हो गये।'' यह कथन आचार्य रामचंद्र शुक्ल का है। शुक्ल ने कबीर दास की भाषा को 'सधुक्कड़ी' कहा है, जबकि हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कबीर को 'वाणी का डिक्टेटर' कहा है।

# उत्तर प्रदेश उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग परीक्षा 2016
# असिस्टेन्ट प्रोफेसर
# हिन्दी

**व्याख्यात्मक हल प्रश्न पत्र** **परीक्षा तिथि : 05.01.2019**

**1. अपभ्रंश भाषा का स्थिति काल है–**

(a) 1500 ई.पू. से 500 ई.पू.
(b) 500 ई.पू. से 1 ई.पू.
(c) 500 ई. से 1000 ई.
(d) 1000 ई. से 1500 ई.

**Ans : (c)** भारतीय आर्यभाषाओं का विकास क्रम इस प्रकार है–

| | |
|---|---|
| **प्राचीन भारतीय आर्यभाषा** | **– 1500-500 ई.पू. तक** |
| 1. वैदिक संस्कृत | – 1500ई.पू. से 1000ई.पू. तक |
| 2. लौकिक संस्कृत | – 1000 ई.पू. से 500 ई.पू. तक |
| **मध्य कालीन भारतीय आर्यभाषा** | **– 500 ई.पू. से 1000 ई. तक** |
| 1. पालि | – 500 ई.पू. से 1 ई. तक |
| 2. प्राकृत | – 1 ई. से 500 ई. तक |
| 3. अपभ्रंश | – 500 ई. से 1000 ई. तक |
| **आधुनिक भारतीय आर्यभाषा** | **– 1000 ई. से अब तक** |

**2. 'पूर्वी हिंदी' की उत्पत्ति किस अपभ्रंश से हुई है?**

(a) ब्राचड़ (b) शौरसेनी
(c) अर्द्धमागधी (d) मागधी

**Ans : (c)** पूर्वी हिन्दी की उत्पत्ति अर्द्धमागधी अपभ्रंश से हुई है।

| **अपभ्रंश** | **उत्पन्न उपभाषा** |
|---|---|
| ब्राचड़ | सिन्धी |
| शौरसेनी | पश्चिमी हिन्दी |
| मागधी | बिहारी हिन्दी |

**3. मेरठ, सहारनपुर, बिजनौर किस बोली के क्षेत्र में आते हैं?**

(a) खड़ी-बोली (b) ब्रजभाषा
(c) कन्नौजी (d) अवधी

**Ans : (a)** मेरठ, सहारनपुर, बिजनौर 'खड़ी बोली' भाषा क्षेत्र में आते हैं। जबकि आगरा, मथुरा 'ब्रजभाषा क्षेत्र' में इटावा, हरदोई, कानपुर, 'कन्नौजी बोली' के क्षेत्र में तथा इलाहाबाद, रायबरेली, सीतापुर, बहराइच आदि 'अवधी बोली' के क्षेत्र में आते हैं।

**4. 'दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता' की भाषा क्या है?**

(a) ब्रजभाषा (b) खड़ी बोली
(c) अवधी (d) बघेली

**Ans : (a)** 'दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता' की भाषा 'ब्रजभाषा' है। इस वार्ता ग्रंथ के लेखक गोसाई गोकुलनाथ हैं। इस वार्ता ग्रंथ के अतिरिक्त ''चौरासी वैष्णवन की वार्ता' भी गोकुलनाथ का ग्रंथ है। इन दोनों ग्रंथों का सम्बन्ध वल्लभ सम्प्रदाय से है।

**5. ईसुरी किस बोली के लोक कवि हैं?**

(a) ब्रजभाषा (b) कन्नौजी
(c) अवधी (d) बुन्देली

**Ans : (d)** ईसुरी 'बुन्देली बोली' के प्रमुख लोक कवि हैं। बुन्देलखण्ड में बोली जाने वाली 'बुन्देली' का क्षेत्र झाँसी, जालौन, हमीरपुर, ओरछा, भोपाल, सागर, होशंगाबाद जिलों तक फैला है। इस प्रकार दक्षिणी उ.प्र., मध्य-प्रदेश का मध्य भाग इस बोली के क्षेत्र में समाविष्ट है। किन्तु बुन्देली में साहित्य रचना बहुत कम हुई है। लाल कवि ने 'छत्रप्रकाश' की रचना बुन्देली में की है।

**6. देवनागरी लिपि की पूर्ववर्ती लिपियों में एक नाम गलत है–**

(a) ब्राह्मी (b) खरौष्ठी
(c) शारदा (d) कुटिला

**Ans : (*)** 'खरोष्ठी लिपि' देवनागरी लिपि की पूर्ववर्ती लिपियों में नहीं है। जबकि 'ब्राह्मी' से ही 'देवनागरी लिपि' का विकास हुआ है। **यथा–**

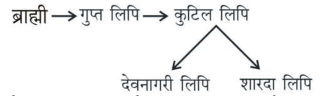


**नोट–** आयोग ने इस प्रश्न को वर्तनी त्रुटि को ध्यान में रखते हुए (*) निरस्त कर दिया है

**7. इनमें द्विगुण व्यंजन है–**

(a) ड (b) ड़
(c) ढ़ (d) ह

**Ans : (*)** द्विगुण व्यंजन 'ड़' है। हिन्दी में दो नवीन विकसित उत्क्षिप्त या द्विगुण व्यंजन– 'ड़ ढ़' है। जबकि ड एवं ढ मूर्धन्य व्यंजन हैं तथा 'ह' कण्ठ ध्वनि है।
**नोट–** आयोग ने इस प्रश्न को वर्तनी त्रुटि को ध्यान में रखते हुए (*) निरस्त कर दिया है

**8. 'राजभाषा' आयोग का गठन संविधान के किस अनुच्छेद के अन्तर्गत हुआ है–**

(a) अनुच्छेद 344 (b) अनुच्छेद 345
(c) अनुच्छेद 346 (d) अनुच्छेद 347

**Ans : (a)** 'राजभाषा' आयोग का गठन संविधान के **अनुच्छेद 344** के अन्तर्गत हुआ है। भारतीय संविधान के अनु0 344 के अनुपालन में राष्ट्रपति द्वारा 7 जून 1955 को राजभाषा आयोग का गठन 'बालगंगाधर खेर' की अध्यक्षता में किया गया। अनुच्छेद 345, 346, 347 में प्रादेशिक भाषाओं संबंधी प्रावधान है।

**9. 'स्वभाषा', 'स्वदेश' तथा 'स्वधर्म' का आन्दोलन किसने चलाया था–**

(a) डॉ. राजेन्द्र प्रसाद (b) महात्मा गाँधी
(c) स्वामी दयानंद सरस्वती (d) विवेकानंद

**Ans : (*)** 'स्वभाषा', 'स्वदेश' तथा 'स्वधर्म' का आन्दोलन 'स्वामी दयानन्द सरस्वती' ने चलाया था। हिन्दी के प्रचार-प्रसार में 'आर्य समाज' के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती का योगदान महत्वपूर्ण है। समूचे राष्ट्र में हिन्दी को प्रसारित करने का श्रेय स्वामी जी को है। इन्होंने अपना प्रसिद्ध ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' हिन्दी में लिखा है। जबकि महात्मा गाँधी ने 1918 ई. में हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास (चेन्नई) की स्थापना की।
**नोट-** आयोग ने इस प्रश्न को मूल्यांकन से बाहर कर दिया है।

**10. इन्हें आरोही क्रम में काल-क्रमानुसार निर्धारित करें–**

(a) उदन्त मार्तण्ड, प्रजामित्र, प्रजाहितैषी, हरिश्चन्द्र मैगजीन
(b) प्रजामित्र, उदन्त मार्तण्ड, प्रजाहितैषी, हरिश्चन्द्र मैगजीन
(c) प्रजाहितैषी, प्रजामित्र, उदन्त मार्तण्ड, हरिश्चन्द्र मैगजीन
(d) हरिश्चन्द्र मैगजीन, प्रजामित्र, प्रजाहितैषी, उदन्त मार्तण्ड

**Ans : (a)** दिये गये पत्रों का काल-क्रमानुसार सही आरोही क्रम इस प्रकार है–

| पत्रिका | कालक्रम | संपादक |
|---|---|---|
| उदन्त मार्तण्ड | 1826 ई. | जुगुल किशोर |
| प्रजामित्र | 1834 ई. | |
| प्रजा हितैषी | 1855 ई. | लक्ष्मण सिंह |
| हरिश्चन्द्र मैगजीन | 1873 ई. | भारतेन्दु हरिश्चन्द्र |

**11. भारतीय संविधान ने अंकों के किस रूप को स्वीकार किया है–**

(a) भारतीय अंकों को
(b) भारतीय अंकों के अन्तर्राष्ट्रीय रूप को
(c) भारतीय मूल के अरबी के अन्तर्राष्ट्रीय रूप को
(d) उपर्युक्त सभी को

**Ans : (b)** भारतीय संविधान ने 'भारतीय अंकों के अन्तर्राष्ट्रीय रूप' को स्वीकार किया है।
अनुच्छेद 343 में उल्लेख किया गया है कि संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी तथा अंकों का प्रयोग वही रहेगा जो अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रचलित है। शेष अन्य दिये गये विकल्प त्रुटिपूर्ण हैं।

**12. इतिहास लेखन की सबसे विकसित पद्धति है–**

(a) विधेयवादी पद्धति (b) वर्णानुक्रम पद्धति
(c) कालानुक्रमी पद्धति (d) समाजशास्त्रीय पद्धति

**Ans : (a)** इतिहास लेखन की सबसे विकसित पद्धति विधेयवादी पद्धति मानी जाती है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इतिहास लेखन की विधेयवादी पद्धति का अनुसरण कर अपना इतिहास ग्रंथ लिखा है।

**13. 'हिंदी साहित्य का इतिहास-दर्शन' नामक ग्रन्थ के लेखक हैं–**

(a) विजयेन्द्र स्नातक (b) डॉ. नलिन विलोचन शर्मा
(c) डॉ. नामवर सिंह (d) डॉ. विनय मोहन

**Ans : (*)** 'साहित्य का इतिहास दर्शन' नामक इतिहास ग्रंथ के लेखक डॉ. नलिन विलोचन शर्मा हैं।

| लेखक | ग्रंथ |
|---|---|
| विजयेन्द्र स्नातक | हिन्दी साहित्य का इतिहास |
| डॉ. नामवर सिंह | दूसरी परम्परा की खोज |
| डॉ. विनय मोहन | हिन्दी साहित्य का अभ्युत्थान |

**नोट-** प्रश्न में 'हिन्दी साहित्य का इतिहास दर्शन' ग्रंथ दिया है जो कि अशुद्ध है जबकि 'साहित्य का इतिहास दर्शन' नलिन विलोचन शर्मा की पुस्तक है। अतः आयोग ने इस प्रश्न को मूल्यांकन से बाहर कर दिया है।

**14. 'कवि वचन सुधा' पत्रिका का प्रकाशनारंभ वर्ष है–**

(a) 1865 ई. (b) 1868 ई.
(c) 1880 ई. (d) 1879 ई.

**Ans : (b)** 'कवि वचन सुधा' पत्रिका का प्रकाशनारंभ वर्ष 1868 ई. है। यह पत्रिका भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा 'काशी' से निकाली जाती थी। इसके अतिरिक्त 'बालाबोधिनी' तथा 'हरिश्चन्द्र मैगजीन' नामक पत्रिकाओं का भी संपादन भारतेन्दु ने किया।

**15. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के इतिहास-ग्रंथ में कालों के नामकरण का आधार क्या रहा है–**

(a) पूर्व परम्परा (b) युग प्रवृत्ति
(c) प्रमुख ग्रन्थ (d) इनमें से कोई नहीं

**Ans : (b)** आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के इतिहास-ग्रंथ में कालों के नामकरण का आधार 'युग प्रवृत्ति' रहा है। आचार्य शुक्ल ने अपना इतिहास ग्रंथ– 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' विधेयवादी पद्धति पर लिखा है जिसका प्रकाशन 1929 ई. में हुआ।

**16. निम्नलिखित में से कौन-सी श्रेणी काल-क्रमानुसार सही है–**

(a) बीसलदेव रासा, पृथ्वीराज रासो, हम्मीर रासो, खुमाण रासो
(b) पृथ्वीराज रासो, बीसलदेव रास, हम्मीर रासो, खुमाण रासो
(c) खुमाण रासो, बीसलदेव रास, पृथ्वीराज रासो, हम्मीर रासो
(d) हम्मीर रासो, पृथ्वीराज रासो, बीसलदेव रास, खुमाण रासो

**Ans : (*)** रासो ग्रंथों का सही कालक्रमानुसार क्रम–

| ग्रंथ | समय | लेखक |
|---|---|---|
| खुमाण रासो | 9वीं शती | दलपति विजय |
| बीसलदेव रासो | 1212 सं. | नरपति नाल्ह |
| पृथ्वीराज रासो | 13वीं शती | चन्दबरदायी |
| हम्मीर रासो | 14वीं शती का अंतिम चरण | शार्ङ्गधर |

**नोट-** आयोग ने इस प्रश्न को मूल्यांकन से बाहर कर दिया है।

**17. इन सिद्धों एवं नाथों में सबसे पुराने हैं–**

(a) सरहपा (b) मछंदरनाथ
(c) कण्हपा (d) गोरखनाथ

**Ans : (a)** सिद्धों एवं नाथों में सबसे पुराने सरहपा हैं। सिद्धों से ही नाथ सम्प्रदाय की उत्पत्ति हुई थी जिसके प्रणेता 'गोरखनाथ' थे। 'सरहपा' को हिन्दी का प्रथम कवि माना गया है, जिनकी रचना 'दोहाकोश' है। 'कण्हपा' सिद्धों में सबसे श्रेष्ठ विद्वान तथा सबसे बड़े कवि माने जाते हैं किन्तु इनका कोई ग्रंथ प्राप्त नहीं है। प्रश्न के विकल्प में सरहपा दिया गया है पर 'सरहपा' होना तर्कसंगत है।

**18. 'द्वैताद्वैतवाद' के प्रवर्तक आचार्य का क्या नाम है–**

(a) निम्बार्काचार्य (b) विष्णुस्वामी
(c) माध्वाचार्य (d) वल्लभाचार्य

**Ans : (a)**

| प्रवर्तक | वाद | सम्प्रदाय |
|---|---|---|
| निम्बार्काचार्य | द्वैताद्वैतवाद | सनकादि |
| रामानुजाचार्य | विशिष्टाद्वैतवाद | श्री |
| मध्वाचार्य | द्वैतवाद | ब्रह्म |
| विष्णुस्वामी | शुद्धाद्वैतवाद | रूद्र |
| बल्लभाचार्य | शुद्धाद्वैतवाद | रूद्र |

**19. सूफी काव्य परम्परा की सर्वश्रेष्ठ रचना है–**

(a) मधुमालती (b) मृगावती
(c) माधवानल कामकन्दला (d) पद्मावत

**Ans : (d)** सूफी काव्य परम्परा की सर्वश्रेष्ठ रचना पद्मावत है। पद्मावत (1540 ई.) मलिक मुहम्मद 'जायसी' का श्रेष्ठ प्रेमाख्यानक महाकाव्य है। इस महाकाव्य में 57 खण्ड हैं। अन्य ग्रंथ व रचनाकार इस प्रकार हैं–

| ग्रंथ | रचनाकार |
|---|---|
| मृगावती | कुतुबन |
| मधुमालती | मंझन |
| माधवानल कामकन्दला | आलम |

**20. निम्नलिखित को कालक्रम के अनुसार व्यवस्थित करें–**

(a) सूरदास, स्वामी हरिदास, मीराबाई, रसखान
(b) स्वामी हरिदास, सूरदास, मीराबाई, रसखान
(c) सूरदास, रसखान, मीराबाई, स्वामी हरिदास
(d) स्वामी हरिदास, सूरदास, रसखान, मीराबाई

**Ans : (*)** कालक्रम के अनुसार व्यवस्थित क्रम–

| रचनाकार | कालक्रम |
|---|---|
| स्वामी हरिदास | 1478 ई. |
| सूरदास | 1478 ई. |
| मीराबाई | 1516 ई. |
| रसखान | 1533 ई. |

**नोट-** सूरदास और हरिदास का जन्म वर्ष एक होने के कारण आयोग ने इस प्रश्न को मूल्यांकन से बाहर कर दिया है।

**21. 'लोकनायक वही हो सकता है जो समन्वय करने का अपार धैर्य लेकर आया हो। उनका सारा काम समन्वय की विराट चेष्टा है।'' यह कथन किस लेखक का है–**

(a) हजारी प्रसाद द्विवेदी (b) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
(c) महावीर प्रसाद द्विवेदी (d) डॉ. नगेन्द्र

**Ans : (a)** आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी रामभक्त कवियों में श्रेष्ठ कवि गोस्वामी तुलसीदास के सन्दर्भ में लिखते हैं कि–
''लोकनायक वही हो सकता है जो समन्वय करने का अपार धैर्य लेकर आया हो। उनका सारा काव्य समन्वय की विराट चेष्टा है।''
शेष अन्य तीनों आलोचकों के नाम इस कथन से संगत नहीं है।

**22. निम्नलिखित कवियों के जीवन काल का सही आरोही क्रम है–**

(a) भूषण, मतिराम, बिहारी, देव
(b) मतिराम, भूषण, बिहारी, देव
(c) बिहारी, मतिराम, भूषण, देव
(d) बिहारी, भूषण, मतिराम, देव

**Ans : (d)** दिये गये कवियों के जीवन काल का सही आरोही क्रम है–

| कवि | समय |
|---|---|
| बिहारी | 1595 ई. |
| भूषण | 1613 ई. |
| मतिराम | 1617 ई. |
| देव | 1673 ई. |

**23. 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' का खड़ी बोली में अनुवाद किसने किया था–**

(a) राजा लक्ष्मण सिंह (b) सदासुखलाल 'नियाज'
(c) भारतेन्दु (d) इंशाअल्ला खाँ

**Ans : (a)** अभिज्ञान शाकुन्तलम् का हिन्दी खड़ी बोली में अनुवाद 'राजा लक्ष्मण सिंह' ने किया था।

| लेखक | कृति |
|---|---|
| मुंशी सदासुख लाल 'नियाज' | सुखसागर |
| भारतेन्दु हरिश्चन्द्र | भारत दुर्दशा |
| इंशा अल्ला खाँ | रानी केतकी की कहानी |

**24. 'भारत बन्धु' पत्रिका का सम्पादन कौन करता था–**

(a) तोताराम (b) सदानन्द
(c) प्रतापनारायण मिश्र (d) बनारसीदास चतुर्वेदी

**Ans : (a)** 'भारत बन्धु' पत्रिका का सम्पादन 'तोताराम' करते थे। इस पत्रिका का प्रकाशनारंभ 1876 ई. में अलीगढ़ से हुआ, यह साप्ताहिक पत्रिका थी। प्रताप नारायण मिश्र 1883 ई. में कानपुर से मासिक पत्रिका ब्राह्मण निकालते थे। 'विशाल भारत' नामक मासिक पत्रिका के सम्पादक 'बनारसीदास चतुर्वेदी' थे। यह 1928 में प्रकाशित हुआ था।

**25. ''साहित्य जन समूह के हृदय का विकास है'', यह परिभाषा किसकी है–**

(a) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (b) बालकृष्ण भट्ट
(c) महावीर प्रसाद द्विवेदी (d) हजारी प्रसाद द्विवेदी

**Ans : (b)** ''साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है।'' यह परिभाषा 'बालकृष्ण भट्ट' की है। बालकृष्ण भट्ट जी हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध निबन्धकार हैं। इनको आचार्य शुक्ल ने 'हिन्दी का स्टील' कहा है। इनके प्रमुख निबन्ध–
(1) चन्द्रोदय (2) शब्द की आकर्षण शक्ति (3) कल्पना (4) मेला-ठेला (5) बाल-विवाह (6) एक अनोखा स्वप्न (7) प्रतिभा (8) आत्मगौरव (9) रूचि (10) आशा
जबकि उपर्युक्त दी गयी परिभाषा से भारतेन्दु, महावीर प्रसाद द्विवेदी, हजारी प्रसाद द्विवेदी का सम्बन्ध नहीं है।

**26. ''परमात्मा की छाया आत्मा में और आत्मा की छाया परमात्मा में पड़ने पर छायावाद की सृष्टि होती है।'' यह कथन किसका है–**

(a) डॉ. नगेन्द्र (b) डॉ. रामविलास शर्मा
(c) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (d) डॉ. रामकुमार वर्मा

**Ans : (d)** ''परमात्मा की छाया आत्मा में और आत्मा की छाया परमात्मा में पड़ने पर छायावाद की सृष्टि होती है।'' यह कथन डॉ. रामकुमार वर्मा ने छायावाद को परिभाषित करते हुए कहा है।
**छायावाद की अन्य परिभाषाएँ–**
**डॉ. नगेन्द्र–**''छायावाद स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह है।''
**आचार्य रामचन्द्र शुक्ल–**''छायावाद शब्द का प्रयोग दो अर्थों में समझना चाहिए पहला रहस्यवाद के अर्थ में तथा दूसरा काव्य शैली या पद्धति विशेष के व्यापक अर्थ में है।''
**डॉ. रामविलास शर्मा–**''छायावाद स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह नहीं रहा है, वरन् थोथी नैतिकता, रूढ़िवाद और सामन्ती बन्धनों के प्रति विद्रोह रहा है।''

27. **इन कवियों को आरोही काल क्रम में व्यवस्थित करें–**
(a) पन्त, प्रसाद, निराला, महादेवी
(b) प्रसाद, निराला, पन्त, महादेवी
(c) निराला, प्रसाद, पन्त, महादेवी
(d) महादेवी, पन्त, निराला, प्रसाद

**Ans : (b)** कवियों का सही आरोही क्रम–

| **कवि** | **जीवन काल** |
|---|---|
| जयशंकर प्रसाद | 1889-1937 ई. |
| सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' | 1899-1961 ई. |
| सुमित्रानन्दन पंत | 1900-1977 ई. |
| महादेवी वर्मा | 1907-1987 ई. |

28. **''पेट पीठ दोनों मिलकर हैं एक, चल रहा लकुटिया टेक'', इन पंक्तियों में व्यक्त की गई है–**
(a) अंध रूढ़ि की प्रतिक्रिया
(b) पूँजीपतियों के प्रति घृणा
(c) भिक्षुक वर्ग की दयनीय स्थिति
(d) शोषक वर्ग की मनोवृत्ति

**Ans : (c)** ''पेट पीठ दोनों मिलकर हैं एक, चल रहा लकुटिया टेक'', इन पंक्तियों में 'भिक्षुक वर्ग की दयनीय स्थिति' को व्यक्त किया गया है। यह पंक्ति सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की कविता 'भिक्षुक' से उद्धृत है।

29. **निम्नलिखित में से कौन-सा कवि आधन्त्र प्रगतिवादी नहीं रहा है–**
(a) नागार्जुन (b) केदारनाथ अग्रवाल
(c) रामविलास शर्मा (d) नरेन्द्र शर्मा

**Ans : (*)** नरेन्द्र शर्मा आद्यन्त प्रगतिवादी कवि नहीं रहे हैं, यह व्यक्तिवादी कवि (प्रेम और मस्ती का काव्य) है। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं– प्रभातफेरी, प्रवासी के गीत, पलाशवन, मिट्टी और फूल, रक्त चंदन, अग्निशस्य जबकि नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल तथा रामविलास शर्मा आद्यन्त प्रगतिवादी कवि हैं।
**नोट–** वर्तनी के दृष्टि से आधन्त्र त्रुटिपूर्ण होने के कारण आयोग ने इसका उत्तर (*) माना है।

30. **'ठण्डा लोहा' के रचनाकार हैं–**
(a) धर्मवीर भारती (b) मुक्तिबोध
(c) अज्ञेय (d) नागार्जुन

**Ans : (a)** 'ठण्डा लोहा' के रचनाकार 'धर्मवीर भारती' हैं। इनकी अन्य कृतियाँ– (1) कनुप्रिया (1959 ई.) (2) सात गीत वर्ष (1959 ई.) (3) अन्धा युग (1955-गीतिनाट्य)।
**मुक्तिबोध की प्रमुख रचनाएं–**(1) चाँद का मुँह टेढ़ा है (1964 ई.) (2) भूरि-भूरि खाक धूल (1980 ई.)
**अज्ञेय की रचनाएँ–**(1) भग्नदूत (1933 ई.) (2) चिन्ता (1942) (3) इत्यलम् (1946 ई.) (4) हरि घास पर क्षण भर (1949) (5) बावरा अहेरी (1954 ई.) (6) सागर मुद्रा (1970 ई.) (7) आँगन के पार द्वार (1961 ई.)

31. **राधाकृष्ण ने गोवध की समस्या का निवारण करने हेतु कौन-सा उपन्यास लिखा था–**
(a) निस्सहाय हिन्दू (b) भूतनाथ
(c) आदर्श हिन्दू (d) इनमें से कोई नहीं

**Ans : (a)** 'राधाकृष्ण दास' के उपन्यास 'निस्सहाय हिन्दू' में गोवध की समस्या का निवारण करने हेतु प्रयास किया गया है। जबकि 'भूतनाथ' उपन्यास 'देवकीनन्दन खत्री' द्वारा लिखित है और 'आदर्श हिन्दू' उपन्यास के लेखक 'मेहता लज्जाराम शर्मा' हैं।

32. **प्रेमचन्द के उपन्यासों का काल क्रम निर्धारित कीजिए–**
(a) सेवासदन, प्रेमाश्रम, निर्मला, गोदान
(b) प्रेमाश्रम, निर्मला, सेवासदन, गोदान
(c) सेवासदन, प्रेमाश्रम, निर्मला, गोदान
(d) निर्मला, सेवासदन, प्रेमाश्रम, गोदान

**Ans : (*)** कथा सम्राट मुंशी प्रेमचन्द के उपन्यासों का सही क्रम–
सेवासदन – 1918 ई.
प्रेमाश्रम – 1922 ई.
निर्मला – 1927 ई.
गोदान – 1936 ई.
**नोट-** इस प्रश्न में विकल्प (a) और (c) एक समान होने के कारण प्रश्न त्रुटिपूर्ण है। अतः आयोग ने इस प्रश्न को मूल्यांकन से बाहर कर दिया है।

33. **''इतिहास इस बात का गवाह है कि इस महिमामयी शक्ति की उपेक्षा करने वाले साम्राज्य नष्ट हो गए।'' कथन किस उपन्यास से उद्धृत है–**
(a) गोदान (b) दिव्या
(c) आपका बंटी (d) बाणभट्ट की आत्मकथा

**Ans : (d)** ''इतिहास इस बात का गवाह है कि इस महिमामयी शक्ति की उपेक्षा करने वाले साम्राज्य नष्ट हो गए।''
उपर्युक्त कथन 'आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी' द्वारा लिखित उपन्यास 'बाणभट्ट की आत्मकथा' से उद्धृत किया गया है। अन्य उपन्यास व उपन्यासकार इस प्रकार हैं–

| **उपन्यास** | **उपन्यासकार** |
|---|---|
| गोदान | प्रेमचन्द |
| दिव्या | यशपाल |
| आपका बंटी | मन्नू भण्डारी |

34. **इनका सही काल क्रम बताइए–**
(a) विचित्र विवाह, परदा, चुम्बन, समाज सेवक
(b) विचित्र विवाह, समाज सेवक, परदा, चुम्बन
(c) समाज सेवक, परदा, चुम्बन, विचित्र विवाह
(d) परदा, समाज सेवक, चुम्बन, विचित्र विवाह

**Ans : (*)** दी गयी रचनाओं का सही काल क्रम इस प्रकार है–

| **रचना** | **रचनाकार** |
|---|---|
| विचित्र विवाह | रामचरित उपाध्याय |
| समाज सेवक | – |
| परदा | यशपाल |
| चुम्बन | पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' |

**नोट-** 'समाज सेवक' हिन्दी के किसी भी साहित्यकार की रचना न होने के कारण आयोग ने इस प्रश्न को मूल्यांकन से बाहर कर दिया है।

35. 'जैसे को तैसा' नाटक के रचनाकार का नाम बताइए–

(a) गोपालराम गहमरी (b) भारतेन्दु

(c) जयशंकर 'प्रसाद' (d) इनमें से कोई नहीं

**Ans : (a)** 'जैसे को तैसा' नाटक के रचनाकार का नाम 'गोपालराम गहमरी' हैं। यह एक अनूदित नाटक है। इनके अन्य नाटक–'देश-दशा' है। जबकि भारतेन्दु के प्रमुख नाटक-अंधेर नगरी, भारत दुर्दशा, रत्नावली, भारत-जननी एवं सत्य हरिश्चन्द्र हैं। जयशंकर प्रसाद ने सज्जन, चन्द्रगुप्त, स्कन्दगुप्त, ध्रुवस्वामिनी जैसे नाटकों की रचना की हैं।

36. निम्नलिखित में प्रसादोत्तर नाटक है–

(a) तीसरा हाथी (b) बिन बाती के दीप

(c) सेतुबन्ध (d) उपर्युक्त सभी

**Ans : (d)** दिये गये सभी नाटक प्रसादोत्तर युगीन हैं।

| **नाटक** | **नाटककार** |
|---|---|
| तीसरा हाथी (1975 ई.) | रमेश बक्षी |
| सेतुबन्ध (1972 ई.) | सुरेन्द्र वर्मा |
| बिन बाती के दीप (1980 ई.) | शंकर शेष |

37. प्रसिद्ध निबन्ध 'अर्द्धनारीश्वर' के लेखक कौन हैं–

(a) रामधारी सिंह 'दिनकर' (b) मैथिलीशरण गुप्त

(c) जयशंकर प्रसाद (d) इनमें से कोई नहीं

**Ans : (a)** प्रसिद्ध निबन्ध 'अर्द्धनारीश्वर' के लेखक रामधारी सिंह 'दिनकर' हैं। इनके अन्य निबन्ध– (1) वट-पीपल (2) रेती के फूल (3) मिट्टी की ओर (4) वेणुवन (5) उजली आग आदि।
जबकि जयशंकर प्रसाद ने 'काव्य और कला तथा अन्य निबन्ध' नामक निबन्ध की रचना की हैं।

38. इन साहित्यकारों को सही कालक्रम में रखिए–

(a) गोपाल सिंह नेपाली, हृदयेश, हरिकृष्ण प्रेमी, रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'

(b) हृदयेश, हरिकृष्ण प्रेमी, गोपाल सिंह नेपाली, रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'

(c) हरिकृष्ण प्रेमी, रामेश्वर शुक्ल 'अंचल', हृदयेश, गोपाल सिंह नेपाली

(d) रामेश्वर शुक्ल 'अंचल', गोपाल सिंह नेपाली, हरिकृष्ण प्रेमी, हृदयेश

**Ans : (*)** दिये गये साहित्यकारों का सही कालक्रम इस प्रकार है–

| **साहित्यकार** | **जन्मकाल** |
|---|---|
| हृदयेश | 1905 ई. |
| हरिकृष्ण प्रेमी | 1908 ई. |
| गोपाल सिंह 'नेपाली' | 1911 ई. |
| रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' | 1915 ई. |

**नोट-** हृदयेश नाम से हिन्दी साहित्य में दो साहित्यकार मिलते हैं। पहला चंडी प्रसाद हृदयेश और दूसरा हृदय नारायण हृदयेश है। अतः आयोग ने इस प्रश्न को मूल्यांकन से बाहर कर दिया है।

39. 'दस तस्वीरें' किस विधा की रचना है–

(a) आत्मकथा (b) जीवनी

(c) रिपोर्ताज (d) रेखाचित्र

**Ans : (d)** 'दस तस्वीरें' रेखाचित्र विधा की रचना है। इसके लेखक जगदीश चन्द्र माथुर हैं। दस तस्वीरें रेखाचित्र का प्रकाशन वर्ष 1963 ई. है।
आत्मकथा, जीवनी, रिपोर्ताज आदि विधाएं असंगत हैं।

40. इनमें से कौन-सा लेखक जीवनी लेखक नहीं है–

(a) डॉ. रामविलास शर्मा (b) अज्ञेय

(c) अमृतराय (d) विष्णु प्रभाकर

**Ans : (b)** अज्ञेय ऐसे लेखक हैं जिन्होंने कोई भी जीवनी नहीं लिखे हैं।

| **लेखक** | **जीवनी** | **जिसकी जीवनी है उसका नाम** |
|---|---|---|
| रामविलास शर्मा | निराला की साहित्य साधना | सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' |
| अमृत राय | कलम का सिपाही | प्रेमचन्द |
| विष्णु प्रभाकर | आवारा-मसीहा | शरतचन्द्र |

41. विभावना अलंकार का लक्षण है–

(a) एक कार्य के अनेक कारण होना

(b) बिना कारण के कार्य की सिद्धि

(c) कारण होने पर भी कार्य की सिद्धि न होना

(d) कारण नहीं, कार्य नहीं

**Ans : (b) विभावना अलंकार**–जब 'बिना कारण के कार्य सिद्धि' हो, वहाँ विभावना अलंकार होता है; जैसे–

बिनु पग चलै, सुनै बिनु काना।
कर बिनु करम, करै विधि नाना।।

42. इनमें से कौन अलंकारवादी आचार्य नहीं है–

(a) केशव (b) जयदेव

(c) भामह (d) आनन्दवर्द्धन

**Ans : (d)** आनन्दवर्द्धन अलंकारवादी आचार्य नहीं हैं, बल्कि ध्वनिवादी आचार्य हैं। जबकि अन्य तीनों अलंकारवादी आचार्य हैं।

| **आचार्य** | **ग्रंथ** |
|---|---|
| भामह | काव्यालंकार |
| जयदेव | चन्द्रालोक |
| आनन्दवर्द्धन | ध्वन्यालोक |
| केशवदास | कविप्रिया |

43. 'ब्रह्मानन्द सहोदर' किसे कहते हैं–

(a) रस (b) वक्रोक्ति

(c) ध्वनि (d) अलंकार

**Ans : (a)** 'रस' को ब्रह्मानन्द सहोदर कहा गया है। तैत्तिरीय उपनिषद् की यह मान्यता है कि-''रसो वै स:'' अर्थात् रस आनन्दस्वरूप ब्रह्म है।

| **सम्प्रदाय** | **प्रणोता** |
|---|---|
| वक्रोक्ति | कुन्तक |
| ध्वनि | आनन्दवर्द्धन |
| अलंकार | भामह |

44. 'मिथक' का घनिष्ठ सम्बन्ध होता है–

(a) अतिमानवीय पौराणिक पात्रों से

(b) विज्ञान लेखन से

(c) प्रौद्योगिकी से

(d) यथार्थवाद से

**Ans : (a)** 'मिथक' का घनिष्ठ सम्बन्ध 'अतिमानवीय पौराणिक पात्रों से होता है। जबकि विज्ञान लेखन, प्रौद्योगिकी (Technology) तथा यथार्थवाद से मिथक का सम्बन्ध नहीं होता है। ये तीनों वास्तविकता से संबंधित होते हैं।

**45. 'आत्मानुभव एवं आत्माभिव्यक्ति को काव्य के लिए आवश्यक माना गया है।' इस कथन वाले आलोचक का नाम है–**

(a) नन्ददुलारे वाजपेयी (b) रामचन्द्र शुक्ल
(c) डॉ. रामविलास शर्मा (d) इनमें से कोई नहीं

**Ans : (*)** 'आत्मानुभव एवं आत्माभिव्यक्ति को काव्य के लिए आवश्यक माना गया है।' यह कथन प्रसिद्ध आलोचक आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी का है। जबकि आचार्य रामचन्द्र शुक्ल तथा डॉ. रामविलास शर्मा का इस कथन से सम्बन्ध नहीं है।
**नोट–** यह कथन न होते हुए काव्य प्रयोजन के संबंध नन्ददुलारे वाजपेयी तथा डॉ. नगेन्द्र की मान्यता है अतः आयोग ने इस प्रश्न को मूल्यांकन से बाहर कर दिया है।

**46. इनमें डॉ. रामविलास शर्मा की कृति का नाम है–**

(a) नया साहित्य : नये प्रश्न
(b) भारतीय सौन्दर्यशास्त्र और तुलसीदास
(c) तुलनात्मक आलोचना
(d) प्रगतिवादी आलोचना की सीमाएँ

**Ans : (*)** दी गयी आलोचनात्मक कृतियों में डॉ. रामविलास शर्मा की कृति "भारतीय सौन्दर्य बोध और तुलसीदास" है। जबकि 'नया साहित्य : नये प्रश्न' आलोचना के लेखक नन्ददुलारे वाजपेयी हैं।
**नोट-** रामविलास शर्मा की पुस्तक भारतीय सौन्दर्य बोध और तुलसीदास है न कि भारतीय सौन्दर्यशास्त्र और तुलसीदास अतः आयोग ने इस प्रश्न को मूल्यांकन से बाहर कर दिया है।

**47. 'प्रतिभा व्युत्पत्ति मिश्र: समवेते श्रेयस्यौ इति' यह मत किस विद्वान का है–**

(a) आचार्य मम्मट (b) आचार्य राजशेखर
(c) आचार्य दण्डी (d) इनमें से कोई नहीं

**Ans : (*)** काव्य हेतुओं में प्रतिभा एवं व्युत्पत्ति का महत्त्व प्रदान करते हुए आचार्य राजशेखर का मत है कि–
'प्रतिभा व्युत्पत्ति मिश्र: समवेते श्रेयस्यौ इति'।
काव्य हेतु तीन हैं–(1) प्रतिभा (2) अभ्यास (3) व्युत्पत्ति।
जबकि आचार्य मम्मट तथा आचार्य दण्डी दोनों इस मत से संगत नहीं हैं।
**नोट-** आयोग ने इस प्रश्न को मूल्यांकन से बाहर कर दिया है।

**48. अरस्तू के अनुकरण सिद्धांत में कौन-सी एक बात नहीं है–**

(a) कविता जगत की अनुकृति है।
(b) अनुकरण की प्रक्रिया आनन्ददायक है।
(c) अनुकरण से हमें शिक्षा मिलती है।
(d) काव्य प्रकृति का अनुकरण नहीं है।

**Ans : (d)** 'काव्य प्रकृति का अनुकरण नहीं है।' यह बात अरस्तू के अनुकरण सिद्धान्त में नहीं है जबकि (1) कविता जगत की अनुकृति है। (2) अनुकरण की प्रक्रिया आनन्ददायक है। (3) अनुकरण से हमें शिक्षा मिलती है। ये तीनों अरस्तू के अनुकरण की विशेषताएं हैं।

**49. 'प्रिंसिपल ऑफ लिटरेरी क्रिटीसिज्म' पुस्तक के लेखक हैं–**

(a) रिचर्ड्स (b) क्रोचे
(c) प्लेटो (d) इलियट

**Ans : (*)** 'प्रिंसिपल ऑफ लिटरेरी क्रिटीसिज्म' पुस्तक के लेखक आई.ए. रिचर्ड्स हैं।

| **लेखक** | | **पुस्तक** |
|---|---|---|
| प्लेटो | – | इओन (Ion) |
| क्रोचे | – | ईस्थेटिक |
| इलियट | – | द सेक्रेड वुड |

**नोट-** आयोग ने इस प्रश्न को मूल्यांकन से बाहर कर दिया है।

**50. किसकी मान्यता है कि औदात्य अभिव्यक्ति की उच्चता और उत्कृष्टता का नाम है–**

(a) मैथ्यू आर्नाल्ड (b) जॉनसन
(c) लोंजाइनस (d) सार्द

**Ans : (c)** "लोंजाइनस की मान्यता है कि औदात्त अभिव्यक्ति की उच्चता और उत्कृष्टता का नाम है।" लोंजाइनस (Longinus) के ग्रंथ का नाम 'पेरिहुप्सुस' है। इस ग्रंथ का सर्वप्रथम प्रकाशन 1554 ई. में हुआ। पेरिहुप्सुस मूलत: रेटोरिक (भाषण शास्त्र) की पुस्तक है।

| **लेखक** | **पुस्तक** |
|---|---|
| मैथ्यू आर्नाल्ड | कल्चर एण्ड अनार्की |
| सार्द्र (सार्ट) | ल नौसी। |

**51. आधुनिक हिन्दी गद्य के जनक माने जाते हैं–**

(a) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (b) रामचन्द्र शुक्ल
(c) महावीर प्रसाद द्विवेदी (d) प्रताप नारायण मिश्र

**Ans : (a)** आधुनिक हिन्दी गद्य के जनक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र माने जाते हैं। भारतेन्दु युग में ही गद्य की लगभग समस्त विधाओं जैसे– उपन्यास, नाटक, निबन्ध, यात्रा साहित्य आदि का विकास हुआ। इस युग-प्रवृत्ति को देखते हुए आचार्य शुक्ल ने इस युग का नामकरण गद्यकाल कर दिया हैं।
प्रताप नारायण मिश्र का योगदान भी सराहनीय है। आधुनिक गद्य के विकास में इन्होंने निबन्ध विधा में अपनी लेखनी चलायी। जबकि महावीर प्रसाद द्विवेदी जी द्विवेदी युग के श्रेष्ठ रचनाकार तथा युग प्रवर्तक हैं इस द्विवेदी युग में 'कहानी' गद्य विधा का विकास हुआ। महावीर प्रसाद द्विवेदी के नाम पर ही द्विवेदी युग का नामकरण हुआ।

**52. 'भारत भारती' काव्य का प्रकाशन कब हुआ–**

(a) 1910 ई. (b) 1911 ई.
(c) 1912 ई. (d) 1915 ई.

**Ans : (c)** 'भारत-भारती' काव्य का प्रकाशन वर्ष 1912 ई. है। इस काव्य कृति के रचनाकार मैथिलीशरण गुप्त हैं। इस रचना से प्रभावित होकर महात्मा गाँधी ने मैथिलीशरण गुप्त को 'राष्ट्र कवि' की उपाधि प्रदान की।
गुप्त जी के प्रमुख ग्रंथ–(1) रंग में भंग (1909 ई.) (2) जयद्रथ वध (1910 ई.) (3) साकेत (1931 ई.) (4) झंकार (1929) (5) साकेत (1931 ई.) (6) यशोधरा (1932 ई.) (7) पंचवटी (1925 ई.) (8) द्वापर (1936 ई.) (9) विष्णुप्रिया (1957 ई.)

**53. रचनाकाल के आरोही क्रम में सुव्यवस्थित वर्ग है–**

(a) साकेत, यशोधरा, जयभारत, द्वापर
(b) साकेत, जयभारत, द्वापर, यशोधरा
(c) साकेत, यशोधरा, द्वापर, जयभारत
(d) साकेत, द्वापर, यशोधरा, जयभारत

**Ans : (c)** मैथिलीशरण गुप्त की रचनाओं का सही क्रम–
साकेत 1931 ई.
यशोधरा 1932 ई.
द्वापर 1936 ई.
जयभारत 1952 ई.

**54. छायावाद को 'स्थूल के विरुद्ध सूक्ष्म की प्रतिक्रिया' किसने कहा था–**

(a) डॉ. नगेन्द्र (b) डॉ. रामविलास शर्मा
(c) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (d) डॉ. रामकुमार वर्मा

**Ans : (*)** "छायावाद स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह है।" यह कथन डॉ. नगेन्द्र का है जबकि प्रश्न में 'स्थूल के विरुद्ध सूक्ष्म की प्रतिक्रिया' आया है जो कि अशुद्ध/असंगत है।
**आचार्य रामचन्द्र शुक्ल–** "छायावाद शब्द का प्रयोग दो अर्थों में समझना चाहिए पहला रहस्यवाद के अर्थ में तथा दूसरा काव्य शैली या पद्धति विशेष के व्यापक अर्थ में है।"
**डॉ. रामविलास शर्मा–** "छायावाद स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह नहीं रहा है, वरन् थोथी नैतिकता, रूढ़िवाद और सामन्ती बन्धनों के प्रति विद्रोह रहा है।"
**डॉ. रामकुमार वर्मा–** "परमात्मा की छाया आत्मा में और आत्मा की छाया परमात्मा में पड़ने पर छायावाद की सृष्टि होती है।"
**नोट-** आयोग ने इस प्रश्न को मूल्यांकन से बाहर कर दिया है।

**55. पन्त को उनकी किस कृति पर भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला था–**

(a) लोकायतन (b) चिदम्बरा
(c) गीतहंस (d) ग्राम्या

**Ans : (b)** सुमित्रानन्दन पंत को उनकी कृति 'चिदम्बरा' के लिए 'भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार' सन् 1968 ई. में प्रदान किया गया। पंत हिन्दी साहित्य में ज्ञानपीठ प्राप्त करने वाले प्रथम रचनाकार हैं। अन्य रचनाएं लोकायतन, गीतहंस तथा ग्राम्या तीनों पंत की ही हैं।

**56. निम्नलिखित में कौन 'तार सप्तक' का कवि है–**

(a) धर्मवीर भारती (b) शमशेर बहादुर सिंह
(c) अज्ञेय (d) नरेश मेहता

**Ans : (c)** 'अज्ञेय' तार सप्तक के कवि हैं। अज्ञेय के सम्पादकत्व में चार सप्तक प्रकाशित हो चुका है। जो इस प्रकार है। (1) तार सप्तक (1943) (2) दूसरा सप्तक (1951) (3) तीसरा सप्तक (1959) (4) चौथा सप्तक (1979 ई.) जबकि धर्मवीर भारती, शमशेर बहादुर सिंह और नरेश मेहता दूसरा सप्तक के कवि हैं। प्रत्येक सप्तक में सात-सात कवि की रचनाएँ संग्रहित हैं।

**57. इनमें से कौन-सा एक कवि नई कविता से संबद्ध नहीं रहा है–**

(a) कुँवर नारायण (b) नेमिचन्द्र जैन
(c) अजीत कुमार (d) दुष्यन्त कुमार

**Ans : (*)** नेमिचन्द्र जैन का सम्बन्ध नई कविता से नहीं रहा है। जबकि कुँवर नारायण और दुष्यंत कुमार का सम्बन्ध नई कविता से है। नेमिचन्द्र जैन का सम्बन्ध प्रयोगवादी कविता से है। इनकी महत्वपूर्ण रचनाएं –अचानक हम फिर, एकान्त आदि।
**कुंवर नारायण की रचनाएं–**चक्रव्यूह, परिवेश : हम तुम।
**दुष्यंत कुमार की रचनाएं–**आवाजों के घेरे, सूर्य का स्वागत, जलते हुए वन का बसंत।
**नोट-** आयोग ने इस प्रश्न को मूल्यांकन से बाहर कर दिया है।

**58. 'प्रभा' नामक पत्रिका का सम्पादन किसने किया–**

(a) हरिवंशराय 'बच्चन' (b) धूमिल
(c) बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' (d) प्रभाकर माचवे

**Ans : (c)** बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने 'प्रभा' नामक पत्रिका का सम्पादन किया। बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' की प्रमुख रचनाएं–कुंकुम, रश्मिरेखा, अपलक, क्वासि, विनोबास्तवन, उर्मिला आदि। जबकि हरिवंश राय बच्चन, धूमिल और प्रभाकर माचवे का सम्बन्ध 'प्रभा' पत्रिका से नहीं है।

**59. प्रयोगवाद के प्रवर्तक के अनुसार प्रयोगवादी काव्य का सबसे मुख्य तत्त्व क्या होना चाहिए–**

(a) मात्रिक छंदों के बजाय वर्णवृत्तों का प्रयोग
(b) बौद्धिकता की अपेक्षा भावुकता की प्रतिष्ठा
(c) नई नई राहों का अन्वेषण
(d) काव्य की पूर्व परम्परा का संपूर्ण निषेध

**Ans : (c)** प्रयोगवाद के प्रवर्तक अज्ञेय के अनुसार प्रयोगवादी काव्य का सबसे प्रमुख तत्व "नई नई राहों का अन्वेषण करना है।" प्रयोगवाद का प्रारम्भ सन् 1943 में अज्ञेय द्वारा सम्पादित तारसप्तक के प्रकाशन से माना जाता है। तारसप्तक में नई-नई विचारधाराओं के सात प्रमुख कवियों की रचनाएं प्रकाशित होती थी।

**60. 'ठेठ हिंदी का ठाठ' तथा 'अधखिला फूल' किसके उपन्यास हैं–**

(a) प्रेमचन्द
(b) निराला
(c) दिनकर
(d) अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

**Ans : (d)** ठेठ हिन्दी का ठाठ (1899) तथा अधखिला फूल के उपन्यासकार अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' है।
**प्रेमचन्द के महत्वपूर्ण उपन्यास–**सेवा सदन, रंगभूमि, गबन, कर्मभूमि, निर्मला, कायाकल्प, प्रेमा, गोदान,देवस्थान रहस्य, मंगलसूत्र (अपूर्ण)।
**निराला के महत्वपूर्ण उपन्यास–**अप्सरा, अलका, निरूपमा, कुल्लीभाट, प्रभावती, काले कारनामे, चोटी की पकड़।

**61. 'परीक्षा गुरु' उपन्यास का प्रकाशन वर्ष है–**

(a) 1882 ई. (b) 1884 ई.
(c) 1883 ई. (d) 1885 ई.

**Ans : (a)** 'परीक्षा गुरु' उपन्यास का प्रकाशन वर्ष 1882 ई. है। इसके लेखक लाला श्रीनिवासदास जी हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल 'परीक्षा गुरु' (1882 ई.) को हिन्दी का प्रथम उपन्यास मानते हैं।

**62. निम्नलिखित में से कौन-सी कहानी प्रसाद द्वारा रचित नहीं है–**

(a) ममता (b) सुजान भगत
(c) सालवती (d) छाया

**Ans : (b)** 'सुजानभगत' कहानी प्रसाद द्वारा रचित नहीं है। बल्कि यह प्रेमचन्द की कहानी है। अन्य विकल्प- ममता, सालवती, छाया प्रसाद की कहानी है।
**प्रसाद की अन्य कहानियाँ–**पत्थर की पुकार, उस पार का जोगी, चंदा, खण्डहर की लिपि, मधुआ, पुरस्कार, गुण्डा, छोटा जादूगर।
**कहानी संग्रह–**प्रतिध्वनि, आकाशदीप, आंधी, इन्द्रजाल।

**63. 'नया रास्ता' कहानी के लेखक हैं–**
(a) रामप्रसाद निरंजनी (b) रामप्रसाद पहाड़ी
(c) डॉ. सत्यप्रकाश संगर (d) इस्मत चुगताई

**Ans : (*)** रामप्रसाद निरंजनी – भाषा योगवाशिष्ठ (हिन्दी के प्रथम प्रौढ गद्य लेखन के लिए प्रसिद्ध)
रामप्रसाद पहाड़ी – उपन्यास- सड़क पर, नया रास्ता, बया का घोसला, बरगद की जड़ें तथा सराय।
सत्यप्रकाश संगर – नया मार्ग (कहानी संग्रह), अफ्रीका का आदमी (कहानी संग्रह), चाँद रानी (उपन्यास)
इस्मत चुगताई – कहानी- चोटें, छुई-मुई, एक बात, कलियाँ, एक रात, दोजखी। उपन्यास- टेढी लकीर, दिल की दुनिया, बहरूप नगर, सैदाई, जंगली कबूतर।
**नोट-** 'नया रास्ता' नाम से कहानी विधा की कोई भी रचना दिये गये साहित्यकारों की नहीं है। अतः आयोग ने इस प्रश्न को मूल्यांकन से बाहर कर दिया है।

**64. इन भारतेन्दुयुगीन नाटकों का सही कालक्रम क्या है–**
(a) 1800 - 1850 ई. (b) 1850 - 1885 ई.
(c) 1850 - 1900 ई. (d) 1850 - 1905 ई.

**Ans : (c)** भारतेन्दु युगीन नाटक का सही कालक्रम 1850-1900 ई. है। अन्य विकल्प असंगत है।

**65. 'स्वर्ग की झलक' व 'अन्धी गली' के लेखक इनमें से कौन हैं–**
(a) उपेन्द्रनाथ 'अश्क' (b) उदयशंकर भट्ट
(c) वृन्दावनलाल वर्मा (d) लक्ष्मीनारायण मिश्र

**Ans : (a)** 'स्वर्ग की झलक' व 'अन्धी गली' के लेखक उपेन्द्रनाथ अश्क है।

| **एकांकीकार** | **एकांकी** |
|---|---|
| **उपेन्द्रनाथ अश्क** | लक्ष्मी का स्वागत, पापी, मोहब्बत, जोंक, चरवाहे, पर्दा उठाओ पर्दा गिराओ। |
| **उदयशंकर भट्ट** | एक ही कब्र में, दस हजार, नये मेहमान, पर्दे के पीछे, मुंशी अनोखे लाल, विष की पुड़िया। |
| **वृन्दावनलाल वर्मा** | सबसे बड़ा आदमी, मैं और केवल मैं, दो कलाकार। |

**66. 'आधे-अधूरे' नाटक का मूल प्रतिपाद्य क्या है–**
(a) नौकरशाही
(b) मध्यवर्गीय परिवार की विसंगति
(c) चुनावी दलीय राजनीति
(d) सामुदायिक बिलगाव

**Ans : (b)** 'आधे-अधूरे' नाटक का मूल प्रतिपाद्य मध्यवर्गीय परिवार की विसंगति है। इसके लेखक मोहन राकेश हैं। आधे-अधूरे नाटक को समकालीन जिन्दगी का पहला सार्थक हिन्दी नाटक माना जाता है। आधे-अधूरे नाटक को 'मील का पत्थर' भी कहा जाता है।

**67. 'हिंदी प्रदीप' पत्रिका के सम्पादक कौन थे–**
(a) पण्डित प्रताप नारायण मिश्र
(b) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
(c) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
(d) बालकृष्ण भट्ट

**Ans : (d)** 'हिंदी प्रदीप' पत्रिका के सम्पादक बालकृष्ण भट्ट हैं।

| **पत्रिका** | **सम्पादक** |
|---|---|
| हिंदी प्रदीप (मासिक) | बालकृष्ण भट्ट |
| ब्राह्मण (मासिक) | प्रताप नारायण मिश्र |

**68. 'रसज्ञ रंजन' किसका निबन्ध संकलन है–**
(a) डॉ. श्यामसुन्दर दास (b) हजारी प्रसाद द्विवेदी
(c) महावीर प्रसाद द्विवेदी (d) डॉ. गुलाबराय

**Ans : (c)** 'रसज्ञ रंजन' के लेखक महावीर प्रसाद द्विवेदी है। शेष विवरण निम्नवत है–

| **निबन्धकार** | **निबन्ध** |
|---|---|
| महावीर प्रसाद द्विवेदी | सम्पत्ति शास्त्र, लेखांजलि, नाट्य शास्त्र, उपन्यास रहस्य, भाषा और व्याकरण, कवि और कविता, महाकवि माघ का प्रभात वर्णन, आत्मनिवेदन, प्रभात। |
| बाबू श्याम सुन्दर दास | साहित्य की विशेषताएं, समाज और साहित्य, कर्तव्य और सभ्यता। |
| हजारी प्रसाद द्विवेदी | अशोक के फूल, कल्पलता, मध्यकालीन धर्म, विचार और वितर्क, विचार प्रवाह, कुटज, साहित्य सहचर, आलोक पर्व। |
| डॉ. गुलाबराय | ठलुआ क्लब, फिर निराश क्यों, मेरी असफलताएँ, कुछ उथले कुछ गहरे, मेरे नापिताचार्य, अध्ययन और आस्वाद, प्रबन्ध प्रभाकर। |

**69. सही कालक्रम वाले वर्ग को चिह्नित कीजिए–**
(a) कबीर–सूर–तुलसी–जायसी
(b) कबीर–सूर–जायसी–तुलसी
(c) सूर–कबीर–तुलसी–जायसी
(d) कबीर–तुलसी–जायसी–सूर

**Ans : (*)** कवियों का कालक्रम निम्नलिखित है–

| **कवि** | **जन्म** |
|---|---|
| कबीर | 1398 ई. |
| सूरदास | 1478 ई. |
| जायसी | (अस्पष्ट) |
| तुलसी | 1532 ई. |

**नोट-** आयोग ने इस प्रश्न को मूल्यांकन से बाहर कर दिया है।

**70. 'कला की सहायता से हम लोक के विश्व रूपी जीवन को समझने का साधन प्राप्त करते हैं।' यह कथन किसका है–**
(a) डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल
(b) डॉ. विजय देवनारायण साही
(c) डॉ. नगेन्द्र
(d) डॉ. विजयेन्द्र स्नातक

**Ans : (a)** डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल के अनुसार–कला की सहायता से हम लोक के विश्वरूपी जीवन को समझने का साधन प्राप्त करते हैं।

# उत्तर प्रदेश उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग परीक्षा 2014
# असिस्टेन्ट प्रोफेसर
# हिन्दी

**व्याख्यात्मक हल प्रश्न पत्र** **परीक्षा तिथि : 14.02.2015**

**1. 'कामायनी' के संदर्भ में असत्य कथन को चिन्हित कीजिए:**

(a) यह कृति अभेदमूलक अद्वैतवाद का शंखनाद करती है
(b) यह नारी–सृष्टि के लिए संजीवनी है
(c) इस कृति में मानवीय संवेगों का उदात्तीकरण नहीं है
(d) यह शाश्वत जीवन और मानुष–कल्याण का काव्य है

**उत्तर – (c)**

**व्याख्या –** इस कृति में मानवीय संवेगों का उदात्तीकरण नहीं है 'कामायनी' के संदर्भ में यह असत्य कथन है। जबकि यह कृति अभेदमूलक अद्वैतवाद का शंखनाद करती है। यह नारी–सृष्टि के लिए संजीवनी है। यह शाश्वत जीव और मनुष्य कल्याण का काव्य है। यह सभी कथन 'कामायनी' के संदर्भ में सत्य हैं।

**2. भरतमुनि के 'रससूत्र' की अनुमितिवाद पर आधारित व्याख्या किस आचार्य की है?**

(a) अभिनवगुप्त (b) भट्टनायक
(c) भट्टलोल्लट (d) शंकुक

**उत्तर – (d)**

**व्याख्या –** भरतमुनि के 'रससूत्र' की अनुमितिवाद पर आधारित व्याख्या आचार्य शंकुक ने की है। रससूत्र के व्याख्याता आचार्य एवं उनके सिद्धांत इस प्रकार हैं–

| **आचार्य** | **सिद्धांत** |
|---|---|
| भट्टलोल्लट | उत्पत्तिवाद/आरोपवाद |
| शंकुक | अनुमितिवाद |
| भट्टनायक | भुक्तिवाद/भोगवाद |
| अभिनवगुप्त | अभिव्यक्तिवाद |

**3. निम्नलिखित कवियों को उनके जीवनकालानुसार आरोही क्रम में व्यवस्थित कीजिए:**

(a) केशव, सेनापति, देव, पद्माकर
(b) सेनापति, पद्माकर, देव, केशव
(c) देव, केशव, पद्माकर, सेनापति
(d) केशव, देव, सेनापति, पद्माकर

**उत्तर – (a)**

**व्याख्या –** निम्नलिखित कवियों को उनके जीवनकालानुसार आरोही क्रम में इस प्रकार होगा–

| **कवि** | **जीवनकाल** |
|---|---|
| केशव | 1555–1617 ई. |
| सेनापति | 1589 ई. |
| देव | 1673–1767 ई. |
| पद्माकर | 1753–1833 ई. |

**4. संगत युग्म का चयन कीजिए:**

(a) काव्यप्रकाश–आनन्दवर्द्धन
(b) काव्यादर्श–भामह
(c) काव्यालंकारसूत्र–वामन
(d) काव्यालंकार–दण्डी

**उत्तर –(c)**

**व्याख्या –** संगत युग्म इस प्रकार होगा–

| **रचना** | **रचनाकार** |
|---|---|
| काव्यप्रकाश | मम्मट |
| काव्यादर्श | दण्डी |
| काव्यालंकारसूत्र | वामन |
| काव्यालंकार | भामह |

**5. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:**

1. प्रयोगवाद का अधिक ध्यान कलाकेन्द्रित था
2. प्रगतिवाद और प्रयोगवाद के द्वन्द्व से नयी कविता तथा साहित्य के अन्य रूप सामने आए
3. प्रयोगवाद में सामाजिक समस्याओं को नजर–अन्दाज नहीं किया गया।

**उपर्युक्त में कौन–सा/से कथन सत्य है/हैं?**

(a) 1 और 2 (b) केवल 2
(c) 2 और 3 (d) 1 और 3

**उत्तर – (a)**

**व्याख्या –**
(1) प्रयोगवाद का अधिक ध्यान कलाकेन्द्रित था।
(2) प्रगतिवाद और प्रयोगवाद के द्वन्द्व से नयी कविता तथा साहित्य के अन्य रूप सामने आए।
उपर्युक्त कथन 1 और 2 सत्य हैं।

**6. रैदास किसके गुरू थे?**

(a) मलूकदास (b) हरिदास
(c) लालदास (d) मीराबाई

**उत्तर –(d)**

**व्याख्या –** 'रैदास' मीराबाई के गुरू थे। इनके 40 पद 'गुरूग्रंथ साहब' में संकलित हैं। रैदास का जन्म 1388 ई. में काशी में हुआ था। इनके गुरू का नाम रामानंद था। ये जाति के चमार थे। इनकी प्रसिद्ध पंक्ति है– "प्रभु जी तुम चन्दन हम पानी, जाकी अंग–अंग बास समानी।" निम्नलिखित संत कवियों के गुरूओं का नाम इस प्रकार है–

| संत कवि | गुरू |
|---|---|
| मलूकदास | पुरूषोत्तम |
| हरिदास | प्रागदास |
| लालदास | गदन चिश्ती |
| मीराबाई | रैदास |

**7. निम्नलिखित में से कौन–सा एक कवि लक्षणग्रंथकार नहीं है?**

(a) घनानन्द (b) चिंतामणि
(c) सेनापति (d) मतिराम

**उत्तर –(a)**

**व्याख्या –** 'घनानन्द' लक्षण ग्रंथकार नहीं है। ये रीतिमुक्त धारा के कवि हैं। इनका जन्म (1689 ई.) बुलन्द शहर में हुआ था। यह निम्बार्क सम्प्रदाय में दीक्षित थे। इनके आश्रयदाता मुहम्मद शाह रंगीले थे। इनके द्वारा रचित काव्य कृतियाँ है– (1) सुजान सार (2) इश्कलता (3) विरहलीला (4) वियोग बेलि (5) कोकसार (6) कृपाकंद (7) रसकेलि वल्ली (8) यमुना यश।

**8. संगत युग्म का चयन कीजिए:**

(a) रामानुजाचार्य – शुद्धाद्वैतवाद
(b) निम्बार्काचार्य – द्वैताद्वैतवाद
(c) बल्लभाचार्य – द्वैतवाद
(d) मध्वाचार्य – विशिष्टाद्वैतवाद

**उत्तर – (b)**

**व्याख्या –** निम्नलिखित आचार्य और उनके दार्शनिक सिद्धान्त का संगत युग्म इस प्रकार होगा–

| आचार्य | | दार्शनिक सिद्धान्त |
|---|---|---|
| रामानुजाचार्य | – | विशिष्टाद्वैतवाद |
| निम्बार्काचार्य | – | द्वैताद्वैतवाद |
| बल्लभाचार्य | – | शुद्धाद्वैतवाद |
| मध्वाचार्य | – | द्वैतवाद |

**9. कालक्रमानुसार निबन्ध–संग्रहों का सही अनुक्रम है:**

(a) तुम चन्दन हम पानी, आँगन का पंछी और बनजारा मन, परम्परा बन्धन नहीं, भावपुरूष श्रीकृष्ण
(b) परम्परा बन्धन नहीं, तुम चन्दन हम पानी, आँगन का पंछी और बनजारा मन, भावपुरूष श्रीकृष्ण
(c) तुम चन्दन हम पानी, परम्परा बन्धन नहीं, भावपुरूष श्रीकृष्ण, आँगन का पंछी और बनजारा मन,
(d) आँगन का पंछी और बनजारा मन, तुम चन्दन हम पानी, भावपुरूष श्रीकृष्ण, परम्परा बन्धन नहीं

**उत्तर – (a)**

**व्याख्या –** विद्यानिवास मिश्र के प्रमुख निबंधों का कालक्रम है–

| निबन्ध | | कालक्रम |
|---|---|---|
| तुम चन्दन हम पानी | – | 1957 ई. |
| आँगन का पंछी और बंजारा मन | – | 1963 ई. |
| परम्परा बंधन नहीं | – | 1976 ई. |
| भावपुरूष श्रीकृष्ण | – | 1990 ई. |

**10. स्थापना (A) : प्रगतिवाद सामूहिकता, वर्ग–संघर्ष और सर्वहारा की विजय को लेकर चला।**
**तर्क (R) : क्योंकि वह मार्क्सवाद पर आधारित था।**
**कूट :**

(a) A सही R गलत है
(b) A और R दोनों सही हैं
(c) A और R दोनों गलत हैं
(d) A गलत R सही है

**उत्तर – (b)**

**व्याख्या –** प्रगतिवाद सामूहिकता, वर्ग संघर्ष और सर्वहारा की विजय को लेकर चला क्योंकि वह मार्क्सवाद पर आधारित था। उपर्युक्त कथन A और तर्क R दोनों सही है।

**11. प्रस्तुत काव्यपंक्ति के रचयिता का नाम चिह्नित कीजिए:**
**'कितने हृदयों के मधुर मिलन, क्रंदन करते वन विरह–कोक'।**

(a) पंत (b) अज्ञेय
(c) प्रसाद (d) निराला

**उत्तर –(c)**

**व्याख्या –** 'कितने हृदयों के मधुर मिलन, क्रंदन करते वन विरह–कोक'। उपर्युक्त पंक्ति जयशंकर 'प्रसाद' द्वारा लिखित है। निम्नलिखित रचनाकारों की काव्य पंक्तियाँ इस प्रकार हैं–

| रचनाकार | काव्य पंक्तियां |
|---|---|
| पंत | अरुण अधरों की पल्लव प्रात, मोतियों सा हिलता हिम हास। |
| महादेवी वर्मा | वे मुस्काते फूल नहीं जिनको आता है मुरझाना वे तारों के दीप नहीं। |
| प्रसाद | मेरा अनुराग फैलने दो, नभ के अभिनव कलरव में, बन किरण कभी आ जाना। |
| निराला | होगी जय, होगी जय, हे पुरुषोत्तम नवीन। |

**12. रामचरितमानस के 'उत्तरकाण्ड' के संबंध में असत्य कथन का चयन कीजिए**

(a) इसमें राम के लोकाश्रयी आनन्द का चित्रण है
(b) यह कवि की कालजयी रचना का समापान बिन्दु है
(c) इसमें शैव एवं वैष्णव मतों का समन्वय दृष्टिगत होता है
(d) इस काण्ड में कवि ने युगीन समस्याओं का उचित तथा सर्वग्राही समाधान दिया है

**उत्तर – (d)**

**व्याख्या –** इस काण्ड में कवि ने युगीन समस्याओं का उचित तथा सर्वग्राही समाधान दिया गया है। यह कथन असत्य है। क्योंकि इस काण्ड में युगीन समस्याओं का उचित तथा सर्वाग्राही समाधान का चित्रण किया गया है।

13. **असत्य कथन को चिह्नित कीजिए:**
(a) 'श्रद्धा' कामायनी का तीसरा सर्ग है
(b) 'राम की शक्तिपूजा' रामकथा से सम्बन्धित रचना है
(c) 'कुकुरमुत्ता' में छायावादी शब्दावली का निषेध
(d) 'अँधेरे में' कविता 'चाँद का मुँह टेढ़ा है' में संकलित नहीं है।
**उत्तर – (d)**

**व्याख्या –** 'अँधेरे में' कविता 'चाँद का मुँह टेढ़ा है' में संकलित नहीं है। यह कथन असत्य है। जबकि– 'श्रद्धा' कामायनी का तीसरा सर्ग है, 'राम की शक्तिपूजा' रामकथा से सम्बन्धित रचना है, 'कुकुरमुत्ता' में छायावादी शब्दावली का निषेध है। सभी कथन सत्य है। 'अंधेरे में' मुक्तिबोध की लम्बी कविता है जबकि 'चाँद का मुँह टेढ़ा है' कविता संग्रह है जिसमें भूल–गलती पता नही, ब्रह्मराक्षस, लकड़ी का रावण, डूबता चाँद, मुझे पुकारती हुई पुकार, मुझे याद आते हैं, मुझे मालूम नहीं आदि कविताएँ संगृहीत हैं।

14. **निम्नलिखित काव्यपंक्तियों के सम्बन्ध में कौन–सा कथन सही नहीं है?**
**आयो घोष बड़ो व्यापारी।**
**लाद खेंप गुन ज्ञान जोग की ब्रज में आय उतारी।**
(a) यहाँ गोपियाँ उद्धव पर व्यंग्य करती है
(b) प्रथम पंक्ति में श्लेष अलंकार है
(c) ब्रजभाषा का प्रयोग किया गया है
(d) यहाँ 'खेंप' का अर्थ है–माल का बोझ
**उत्तर –(b)**

**व्याख्या –** प्रथम पंक्ति में श्लेष अलंकार है यह कथन गलत है क्योंकि इसमें श्लेष अलंकार नहीं है।

15. **'उपदेशरसायनरास' के रचनाकार है:**
(a) कवि विद्याधर (b) शार्ङ्गधर
(c) धनपाल (d) जिनदत्त सूरि
**उत्तर – (d)**

**व्याख्या –** 'उपदेशरसायनरास' के रचनाकार जिनदत्त सूरि है। यह 12वीं शताब्दी में रचित जैन रास परम्परा का प्रथम ग्रंथ माना जाता है। यह अपभ्रंश भाषा का प्रथम रास काव्य है। यह 80 पद्यों का नृत्य गीत रास लीला काव्य है।

16. **भारतेन्दु हरिश्चन्द्र कृत कौन–सा नाटक अनूदित रचना है?**
(a) वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति
(b) चन्द्रावली
(c) विद्यासुन्दर
(d) अंधेर नगरी
**उत्तर – (c)**

**व्याख्या –** भारतेन्दु हरिश्चन्द्र कृत 'विद्यासुन्दर' नाटक अनूदित रचना है। 'विद्यासुन्दर' चौरपंचाशिका (संस्कृत) जो चौर कवि द्वारा रचित थी के बंगाली भाषा में अनूदित (यतीन्द्र मोहन ठाकुर द्वारा) का हिन्दी रूपान्तर है। इनके अन्य अनूदित नाटक हैं – रत्नावली, पाखण्ड विडम्बन, धनंजय विजय, मुद्राराक्षस, दुर्लभबन्धु, कर्पूरमंजरी, सत्य हरिश्चन्द्र, भारतजननी आदि।

17. **'केन्द्रीय सचिवालय हिंदी परिषद्' संस्था का गठन कब किया गया था?**
(a) 1960 (b) 1959
(c) 1963 (d) 1955
**उत्तर – (a)**

**व्याख्या –** 'केन्द्रीय सचिवालय हिंदी परिषद्' संस्था का गठन 3 मई, 1960 ई. में किया गया था। यह संस्था नई दिल्ली में है तथा इसके संस्थापक स्व. श्री हरिबाबू कंसल थे।

18. **'अष्टछाप' की स्थापना कब हुई?**
(a) 1565 ई. (b) 1600 ई.
(c) 1560 ई. (d) 1570 ई.
**उत्तर – (a)**

**व्याख्या –** गोस्वामी विट्ठलनाथ ने अष्टछाप की स्थापना 1565 ई. में की थी। उन्होंने बल्लभाचार्य के चार शिष्यों और चार अपने शिष्यों को मिलाकर 'अष्टछाप' की स्थापना की थी। निम्नलिखित आठ कवि अष्टछाप कवि है–

1. कुंभनदास
2. सूरदास
3. परमानंददास
4. कृष्णदास
– बल्लभाचार्य

5. गोविन्द स्वामी
6. छीतस्वामी
7. चतुर्भुजदास
8. नन्ददास
– विट्ठलनाथ

19. **हिन्दी की प्रथम प्राचीनतम आत्मकथा है:**
(a) मेरी जीवनयात्रा (b) मेरी आत्मकहानी
(c) आत्मकथा (d) अर्द्धकथा
**उत्तर – (d)**

**व्याख्या –** हिन्दी की प्रथम प्राचीनतम आत्मकथा 'अर्द्धकथा' है। सन् 1641 ई. मे बनारसी दास जैन ने ब्रजभाषा पद्य मे 'अर्धकथा' की रचना की। आधुनिक ढंग की हिन्दी की प्रथम आत्मकथा बाबू श्याम सुन्दर दास द्वारा लिखित 'मेरी आत्मकहानी' (1941) है।

20. **विखण्डन समीक्षा प्रणाली के जन्मदाता कौन हैं?**
(a) रोनाल्ड बर्थ (b) देरिदा
(c) स्पिंगार्न (d) रॉबर्ट पेन वारेन
**उत्तर – (b)**

**व्याख्या –** विखण्डन समीक्षा प्रणाली के जन्मदाता जॉक देरिदा थे। इनके द्वारा रचित ग्रंथ हैं–
(1) ऑफ ग्रैमेटोलॉजी (2) राइट एण्ड डिफरेंस

**21. मैथिलीशरण गुप्त की कौन–सी रचना महाभारत सम्बन्धी नहीं है?**

(a) वन –वैभव (b) शक्ति

(c) वक –संहार (d) सैरन्ध्री

**उत्तर – (b)**

**व्याख्या –** मैथलीशरण गुप्त की 'शक्ति' रचना महाभारत सम्बन्धी नहीं है। जबकि वन वैभव, वक –संहार, सैरन्ध्री महाभारत सम्बन्धी रचनाएँ है।

**22. 'दुलहिन अँगिया काहे न धोवाई' इस पंक्ति में कौन–सा अलंकार है?**

(a) वक्रोक्ति (b) श्लेष

(c) रूपकातिशयोक्ति (d) दृष्टान्त

**उत्तर – (c)**

**व्याख्या–** 'दुलहिन अँगिया काहे न धोवाई' पंक्ति में रूपकातिशयोक्ति अलंकार है। जहाँ केवल उपमान के वर्णन से उपमेय का बोध कराया जाय वहाँ रूपकातिशयोक्ति अलंकार होता है।

**23. लिपियों का सही विकासक्रम है:**

(a) सूत्र लिपि, प्रतीकात्मक लिपि, चित्र लिपि, भावमूलक लिपि, ध्वनिमूलक लिपि

(b) प्रतीकात्मक लिपि, चित्र लिपि, सूत्र लिपि, ध्वनिमूलक लिपि, भावमूलक लिपि

(c) चित्र लिपि, सूत्र लिपि, प्रतीकात्मक लिपि, भावमूलक लिपि, ध्वनिमूलक लिपि

(d) भावमूलक लिपि, चित्र लिपि, सूत्र लिपि, ध्वनिमूलक लिपि, प्रतीकात्मक लिपि

**उत्तर – (c)**

**व्याख्या –** लिपियों का सही विकास क्रम है–

चित्रलिपि
↓
सूत्रलिपि
↓
प्रतीकात्मकलिपि
↓
भावमूलकलिपि
↓
ध्वनिमूलकलिपि

**24. 'खुसरो का लक्ष्य जनता का मनोरंजन था, पर कबीर धर्मोपदेशक थे' यह उक्ति किसकी है?**

(a) डॉ. नगेन्द्र

(b) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

(c) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

(d) डॉ. रामकुमार वर्मा

**उत्तर – (b)**

**व्याख्या –** 'खुसरो का लक्ष्य जनता का मनोरंजन था, पर कबीर धर्मोपदेशक थे' यह उक्ति आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की है। शुक्ल जी ने 1929 ई. में 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' नामक ग्रंथ लिखा। यह नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित हिन्दी शब्द सागर की भूमिका के रूप में 'हिन्दी साहित्य का विकास' नाम से प्रकाशित हुआ।

**25. यदि उपमेय–उपमान में बिम्ब–प्रतिबिम्ब भाव हो तो अलंकार होता है:**

(a) विभावना (b) दृष्टान्त

(c) उत्प्रेक्षा (d) रूपक

**उत्तर – (b)**

**व्याख्या –** यदि उपमेय–उपमान में बिम्ब–प्रतिबिम्ब भाव हो तो 'दृष्टान्त अलंकार' होता है।

→ जहाँ कारण के बिना कार्य की उत्पत्ति हो जाय वहाँ 'विभावना अलंकार' होता है।

→ जहाँ उपमेय में उपमान की संभावना या कल्पना कर ली जाय, वहाँ 'उत्प्रेक्षा अलंकार' होता है।

→ जहाँ उपमेय और उपमान में भेदरहित आरोप किया जाता है, वहाँ 'रूपक अलंकार' होता है।

**26. निम्नलिखित काव्यपंक्तियों को उनके कवियों के साथ सुमेलित कीजिए:**

| सूची – I | सुची –II |
|---|---|
| (A) विष्णु का मैं ही सुदर्शन चक्र हूँ | (1) प्रसाद |
| (B) तरल आकांक्षा से है भरा सो रहा आशा का आह्लाद | (2) अज्ञेय |
| (C) विश्वास मलय में मिलकर ग्रह–पथ में टकरायेगा | (3) निराला |
| (D) मैं इस बरगद के पास खड़ा हूँ | (4) मुक्तिबोध |

**कूट :**

| | A | B | C | D |
|---|---|---|---|---|
| (a) | 4 | 3 | 1 | 2 |
| (b) | 3 | 1 | 2 | 4 |
| (c) | 2 | 4 | 3 | 1 |
| (d) | 1 | 3 | 4 | 2 |

**उत्तर – (b)**

**व्याख्या –** कवि और उनके काव्य पंक्तियों का सही सुमेलन –

| सूची-I | | सुची-II |
|---|---|---|
| विष्णु का मै ही सुदर्शन चक्र हूँ | – | निराला |
| तरल आकांक्षा से है भरा सो रहा आशा का आह्लाद | – | प्रसाद |
| विश्वास मलय में मिलकर ग्रहपथ में टकरायेगा | – | अज्ञेय |
| मैं इस बरगद के पास खड़ा हूँ | – | मुक्तिबोध |

27. **करुण को ही एकमात्र रस किसने माना है?**

(a) भोज (b) भामह

(c) भरतमुनि (d) भवभूति

**उत्तर–(d)**

**व्याख्या –** करुण को एकमात्र रस भवभूति ने माना है। इनके द्वारा रचित नाटक है– (1) मालती माधव (2) महावीर चरितम् (3) उत्तर–रामचरितम्। उत्तर–रामचरितम् की महत्वपूर्ण सूक्ति है– एको रस: करुण एव।

28. **'नई कविता' पत्रिका का प्रकाशन–वर्ष है:**

(a) 1954 ई. (b) 1951 ई.

(c) 1952 ई. (d) 1956 ई.

**उत्तर – (a)**

**व्याख्या –** 'नई कविता' का आरम्भ सन् 1954 ई. में जगदीशगुप्त द्वारा सम्पादित 'नयी कविता' पत्रिका के प्रकाशन से माना जाता है। 'नयी कविता' नाम अज्ञेय का दिया हुआ है। अपने एक रेडियो वार्ता में उन्होंने इस पद का सर्वप्रथम प्रयोग किया था।

29. **सुमेलित कीजिए:**

| **निबन्धकार** | **निबन्ध–संग्रह** |
|---|---|
| (A) जैनेन्द्र | (1) निषाद बाँसुरी |
| (B) हजारी प्रसाद द्विवेदी | (2) पगडंडियों का जमाना |
| (C) कुबेरनाथ राय | (3) साहित्य और संस्कृति |
| (D) हरिशंकर परसाई | (4) विचारप्रवाह |

**कूट :**

| | A | B | C | D |
|---|---|---|---|---|
| (a) | 1 | 4 | 2 | 3 |
| (b) | 2 | 4 | 3 | 1 |
| (c) | 3 | 4 | 1 | 2 |
| (d) | 1 | 4 | 3 | 2 |

**उत्तर –(c)**

**व्याख्या –** सही सुमेलन होगा–

| **निबन्धकार** | | **निबन्ध संग्रह** |
|---|---|---|
| जैनेन्द्र | – | साहित्य और संस्कृति |
| हजारी प्रसाद द्विवेदी | – | विचार प्रवाह |
| कुबेरनाथ राय | – | निषाद बाँसुरी |
| हरिशंकर परसाई | – | पगडंडियों का जमाना |

30. **प्रस्तुत पंक्ति के संदर्भ में असत्य कथन का चयन कीजिए:**

**चमकि बीजु घन गरजि तरासा।**

**बिरह काल होइ जीउ गरासा।**

(a) विरह का मानवीकरण है

(b) अवधी भाषा का प्रयोग है

(c) वियोग शृंगार है

(d) प्रकृति का आलम्बन रूप में चित्रण है

**उत्तर – (d)**

**व्याख्या –** चमकि बीजु घन गरजि तरासा।

बिरह काल होइ जीउ गरासा। इस पंक्ति के सन्दर्भ में यह कथन असत्य है कि इसमें प्रकृति का आलम्बन रूप में चित्रण है। जबकि यह सत्य है कि पंक्ति में विरह का मानवीकरण है अवधी भाषा का प्रयोग है तथा वियोग शृंगार है। यहाँ प्रकृति आलम्बन न होकर 'उद्दीपन' रूप में है।

31. **किस बोली में 'न्द' और 'न्ध' पर 'न्न' और 'न्ह' हो जाता है?**

(a) अवधी (b) खड़ी बोली

(c) ब्रज (d) भोजपुरी

**उत्तर –(d)**

**व्याख्या –** भोजपुरी बोली में 'न्द' और 'न्ध' पर 'न्न' और 'न्ह' हो जाता है।
अवधी में 'ऐ' का उच्चारण 'अई' और 'औ' का उच्चारण 'अउ' रूप में होता है।

32. **नवनाथों में इनमें से कौन सम्मिलित नहीं है?**

(a) गोरक्षनाथ (b) नागार्जुन

(c) देवसेन (d) जड़भरत

**उत्तर – (c)**

**व्याख्या –** 'गोरक्ष सिद्धान्त संग्रह' के अनुसार नवनाथों के नाम इस प्रकार है– (1) नागार्जुन (2) जड़भरत (3) हरिश्चन्द्र (4) सत्यनाथ (5) भीमनाथ (6) गोरक्षनाथ (7) चर्पटनाथ (8) जलन्धरनाथ (9) मलयार्जुन। जबकि देवसेन जैन आचार्य है। इनकी कृत 'श्रावकाचार' को डॉ. नगेन्द्र ने हिन्दी की प्रथम रचना माना है।

33. **हिन्दी का पहला रिपोर्ताज किस पत्रिका में प्रकाशित हुआ?**

(a) विशालभारत (b) रूपाभ

(c) सरस्वती (d) हंस

**उत्तर – (b)**

**व्याख्या –** हिन्दी का पहला रिपोर्ताज 'रूपाभ' पत्रिका में दिसम्बर, 1938 में प्रकाशित हुआ। हिन्दी में रिपोर्ताज का जनक शिवदान सिंह चौहान को माना जाता है। इनके द्वारा रचित 'लक्ष्मीपुरा' को हिन्दी का प्रथम रिपोर्ताज माना जाता है।

34. **अधोलिखित पंक्तियों में शब्दशक्ति है:**

**आए जोग सिखावन पाँड़े।**

**परमारथी पुराननि लादे, ज्यौं बनजारे टाँड़े।**

(a) व्यंजना (b) अभिधा

(c) तात्पर्या (d) लक्षणा

**उत्तर – (a)**

**व्याख्या –** "आए जोग सिखावन पाँड़े। परमारथी पुराननि लादे, ज्यौं बनजारे टाँड़े।" उपर्युक्त पंक्ति में व्यंजना शब्द शक्ति है। शब्द के जिस व्यापार से उसके मुख्यार्थ और लक्ष्यार्थ से भिन्न किसी विशेष या गम्भीर या गूढ़ अर्थ का बोध होता है, उसे व्यंजना शब्द शक्ति कहते हैं।

35. **'हरिऔध' कृत 'काव्योपवन' का प्रकाशन–वर्ष है:**

(a) 1907 ई. (b) 1899 ई.

(c) 1909 ई. (d) 1917 ई.

**उत्तर – (c)**

**व्याख्या –** 'हरिऔध' कृत 'काव्योपवन' का प्रकाशन–वर्ष 1909 ई. है। हरिऔध द्वारा रचित काव्य है– प्रिय प्रवास, पारिजात, वैदेहि वनवास, कृष्णशतक, प्रेमप्रपंच, चोखे चौपदे, चुभते चौपदे आदि। 'प्रिय प्रवास' को खड़ी बोली हिन्दी का प्रथम महाकाव्य माना जाता है।

**36. प्रसाद ने अपने किस नाटक में मुख्यत: नारी–मुक्ति की समस्या को उठाया है?**

(a) चन्द्रगुप्त (b) राज्यश्री
(c) स्कन्दगुप्त (d) ध्रुवस्वामिनी

**उत्तर –(d)**

**व्याख्या –** प्रसाद ने 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक में मुख्यत: नारी समस्या को उठाया है। इस नाटक में प्रसाद ने तलाक (विवाह–मुक्ति) एवं पुनर्विवाह का अधिकार हिन्दू स्त्री को है या नहीं इस समस्या को बड़े कौशल से प्रस्तुत किया है। प्रसाद द्वारा रचित अन्य नाटक है– (1) विशाख (2) अजातशत्रु (3) कामना (4) जनमेजय का नागयज्ञ (5) स्कन्दगुप्त (6) एक घूंट (7) चन्द्रगुप्त आदि।

**37. सुमेलित कीजिए:**

| सूची – I | सूची –II |
|---|---|
| (A) अ–कहानी | (1) कमलेश्वर |
| (B) सक्रिय कहानी | (2) डॉ. महीप सिंह |
| (C) समानान्तर कहानी | (3) राकेश वत्स |
| (D) सचेतन कहानी | (4) गंगा प्रसाद विमल |

**कूट :**

| | A | B | C | D |
|---|---|---|---|---|
| (a) | 4 | 3 | 1 | 2 |
| (b) | 2 | 1 | 4 | 3 |
| (c) | 4 | 3 | 2 | 1 |
| (d) | 3 | 2 | 1 | 4 |

**उत्तर –(a)**

**व्याख्या –** निम्नलिखित का सही सुमेलन इस प्रकार होगा–

| सूची – I | | सूची –II |
|---|---|---|
| अ–कहानी | – | गंगा प्रसाद विमल |
| सक्रिय कहानी | – | राकेश वत्स |
| समानान्तर कहानी | – | कमलेश्वर |
| सचेतन कहानी | – | डॉ. महीप सिंह |

**38. सुमेलित कीजिए:**

| सूची – I | सूची –II |
|---|---|
| (A) पेरिइप्सुस | (1) प्लेटो |
| (B) पोइटिक्स | (2) क्रोचे |
| (C) एस्थेटिक्स | (3) लोंजाइनस |
| (D) इओन | (4) अरस्तू |

**कूट :**

| | A | B | C | D |
|---|---|---|---|---|
| (a) | 4 | 3 | 1 | 2 |
| (b) | 2 | 1 | 4 | 3 |
| (c) | 4 | 3 | 2 | 1 |
| (d) | 3 | 4 | 2 | 1 |

**उत्तर – (d)**

**व्याख्या –** निम्नलिखित विकल्पों का सही सुमेलन इस प्रकार होगा–

| सूची – I | | सूची –II |
|---|---|---|
| पेरिइप्सुस | – | लोंजाइनस |
| पोइटिक्स | – | अरस्तू |
| एस्थेटिक्स | – | क्रोचे |
| इओन | – | प्लेटो |

**39. प्रस्तुत पंक्तियों के रचयिता हैं:**
**प्रेम निकेतन श्रीबनहिं, आइ गोबर्धन–धाम।**
**लह्यो सरन चितचाहि कै, जुगलसरूप ललाम।**

(a) नन्ददास (b) पद्माकर
(c) रहीम (d) रसखान

**उत्तर – (d)**

**व्याख्या –** ''प्रेम निकेतन श्रीबनहिं, आइ गोबर्धन–धाम। लह्यो सरन चितचाहि कै, जुगलसरूप ललाम।'' उक्त पंक्ति के रचयिता रसखान हैं। हिन्दी के मुसलमान कवियों में रसखान का महत्वपूर्ण स्थान है। 'दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता' में इनका उल्लेख है। ऐसा प्रसिद्ध है कि इन्होंने गोस्वामी विट्ठलनाथ जी से बल्लभ सम्प्रदाय की दीक्षा ली थी। रसखान द्वारा रचित दो कृतियाँ उपलब्ध हैं– (1) प्रेमवाटिका (2) दानलीला। वर्तमान समय में सर्वाधिक प्रचलित संकलन 'सुजान रसखान' है। जिसमें 181 सवैये, 17 कवित्त, 12 दोहे और 4 सोरठे संकलित हैं।

**40. 'चन्द्रगुप्त' नाटक का कौन–सा नारी पात्र चन्द्रगुप्त के साथ प्रेमभाव नहीं रखती?**

(a) सुवासिनी (b) कल्याणी
(c) कार्नेलिया (d) मालविका

**उत्तर – (a)**

**व्याख्या –** 'चन्द्रगुप्त' नाटक की नारी पात्र 'सुवासिनी' चन्द्रगुप्त के साथ प्रेमभाव नहीं रखती। सुवासिनी शकटार से प्रेम करती थी। जबकि कल्याणी, कार्नेलिया तथा मालविका चन्द्रगुप्त से प्रेमभाव रखती थी। प्रसाद के नाटक 'चन्द्रगुप्त' का प्रकाशन सन् 1933 ई. में 'अभिनव चन्द्रगुप्त' के नाम से किया गया था।

**41. क्रोचे के अभिव्यंजनावाद का सम्बन्ध वक्रोक्ति सिद्धान्त के साथ मानने वाले विद्वान हैं:**

(a) आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी
(b) डॉ. नगेन्द्र
(c) डॉ. रामविलास शर्मा
(d) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

**उत्तर – (d)**

**व्याख्या –** क्रोचे के अभिव्यंजनावाद का सम्बन्ध वक्रोक्ति सिद्धान्त के साथ मानने वाले विद्वान आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हैं। क्रोचे पाश्चात्य दार्शनिक थे। इनके द्वारा रचित महत्वपूर्ण पुस्तक है– (1) इस्थेटिक (2) न्यू एसेज आन एस्थेटिक (3) डिफेंस ऑफ पोएट्र।

**42. हिन्दी नवजागरण को 'मूलत: बुद्धिवादी और रहस्यवाद –विरोधी' कहने वाले विद्वान हैं:**

(a) डॉ. रामविलास शर्मा (b) महावीरप्रसाद द्विवेदी
(c) डॉ. नामवर सिंह (d) रामचन्द्र शुक्ल

**उत्तर – (a)**